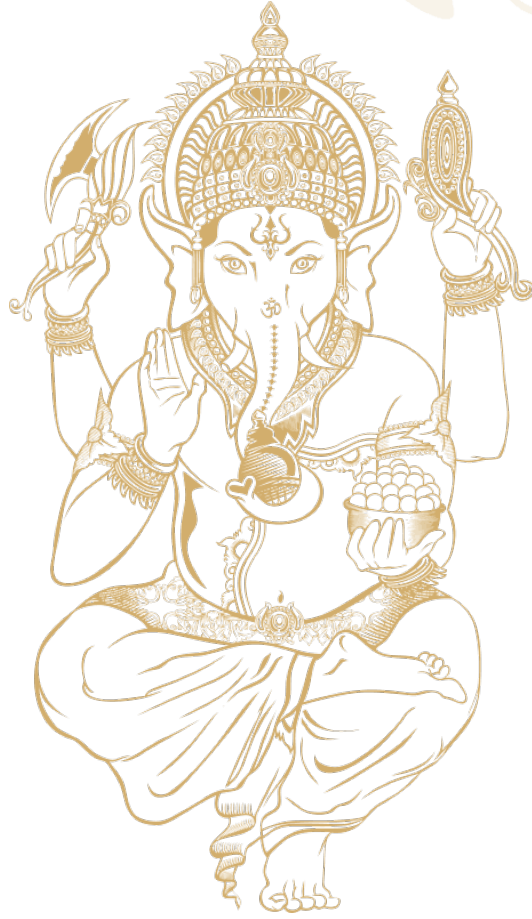




surbhi vaish

08 Feb 1992

01:25 PM

Moradabad

Model: Web-KundliDarpan

Order No: 108046401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 08/02/1992
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 13:25:00 घंटे
इष्ट _____: 16:02:55 घटी
स्थान _____: Moradabad
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:50:19 उत्तर
रेखांश _____: 78:46:23 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:14:54 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:10:05 घंटे
वेलान्तर _____: -00:14:12 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:20:50 घंटे
सूर्योदय _____: 06:59:50 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:58:38 घंटे
दिनमान _____: 10:58:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 25:03:17 मकर
लग्न के अंश _____: 25:54:40 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: साध्य
करण _____: बव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: ज--
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	माघ	19
पंजाबी	संवत : 2048	माघ	26
बंगाली	सन् : 1398	माघ	25
तमिल	संवत : 2048	थई	25
केरल	कोल्लम : 1167	मकरम	25
नेपाली	संवत : 2048	माघ	26
चैत्रादि	संवत : 2048	माघ	शुक्ल 4
कार्तिकादि	संवत : 2048	माघ	शुक्ल 4

पंचांग

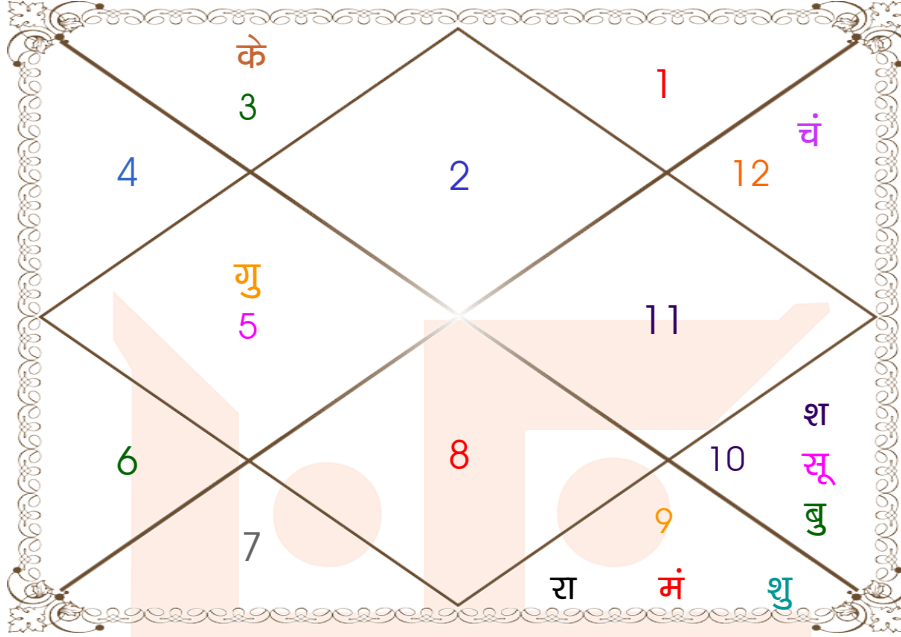
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
 तिथि समाप्ति काल _____ : 08:34:21
 जन्म तिथि _____ : 5
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:56:13 घंटे
 जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
 योग समाप्ति काल _____ : 12:40:47 घंटे
 जन्म योग _____ : साध्य
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 08:34:21 घंटे
 जन्म करण _____ : बव
 भयात _____ : 58:24:21
 भभोग _____ : 64:42:22
 भोग्य दशा काल _____ : शनि 1 वर्ष 10 मा 11 दि

घात चक्र

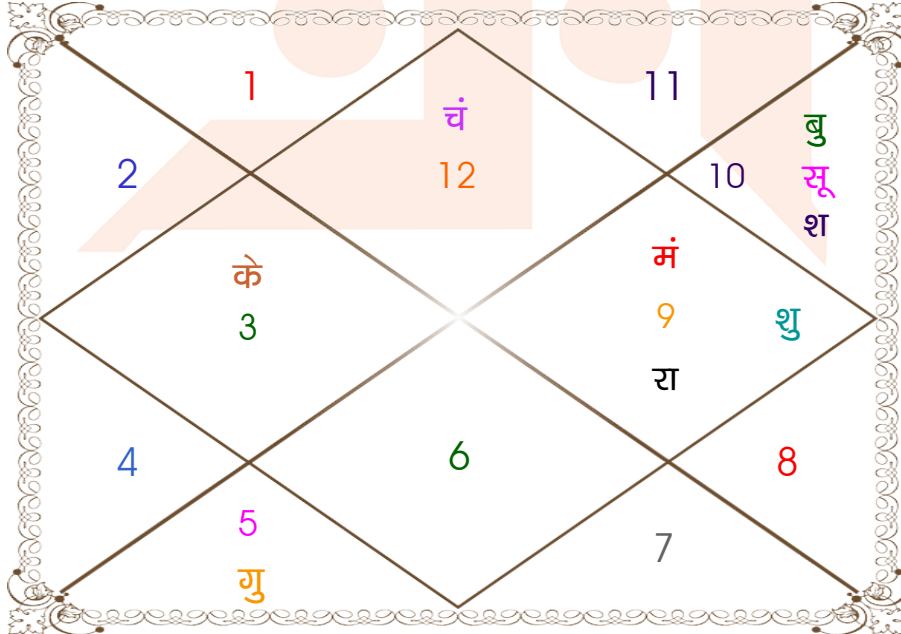
मास _____ : फाल्गुन
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : आश्लेषा
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : चतुष्पाद
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : मृग
 लग्न _____ : सिंह
 सूर्य _____ : मिथुन
 चन्द्र _____ : कुम्भ
 मंगल _____ : कर्क
 बुध _____ : कुम्भ
 गुरु _____ : सिंह
 शुक्र _____ : कन्या
 शनि _____ : वृष
 राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

चं		ल	के
श सू बु			गु
रा मं शु			

लग्न कुण्डली

ल		चं
के		
		श सू बु
गु		मं शु रा

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 10मा 11दि
शनि

08/02/1992

20/12/2094

शनि	20/12/1993
बुध	20/12/2010
केतु	20/12/2017
शुक्र	20/12/2037
सूर्य	20/12/2043
चन्द्र	20/12/2053
मंगल	20/12/2060
राहु	20/12/2078
गुरु	20/12/2094

योगिनी
भद्रिका 0वर्ष 5मा 27दि
भद्रिका

06/08/2023

05/08/2028

भद्रिका	16/04/2024
उल्का	14/02/2025
सिद्धा	04/02/2026
संकटा	17/03/2027
मंगला	07/05/2027
पिंगला	16/08/2027
धान्या	15/01/2028
भ्रामरी	05/08/2028



FUTUREPOINT
Astro Solutions



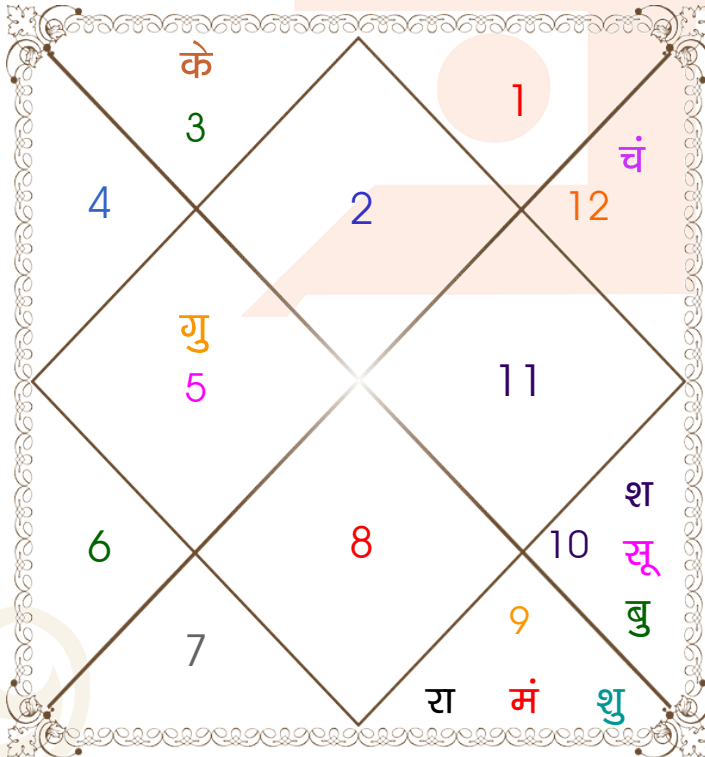
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	25:54:40	349:35:41	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	---
सूर्य			मक	25:03:17	01:00:47	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	15:21:30	12:26:49	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	सम राशि
मंगल			धनु	28:43:40	00:45:37	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	मित्र राशि
बुध	अ		मक	22:02:47	01:43:54	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		सिंह	18:30:16	00:06:41	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
शुक्र			धनु	23:28:50	01:13:51	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि	अ		मक	16:36:37	00:07:08	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	स्वराशि
राहु	व		धनु	15:17:52	00:06:24	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
केतु	व		मिथु	15:17:52	00:06:24	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	नीच राशि
हर्ष			धनु	22:08:04	00:03:09	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
नेप			धनु	23:52:18	00:02:01	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	29:07:23	00:00:36	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	---
दशम भाव			कुंभ	09:31:46	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	गुरु	--

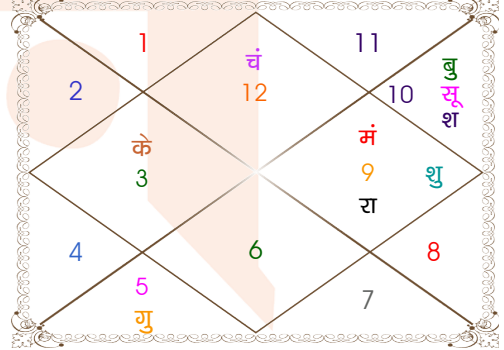
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:07

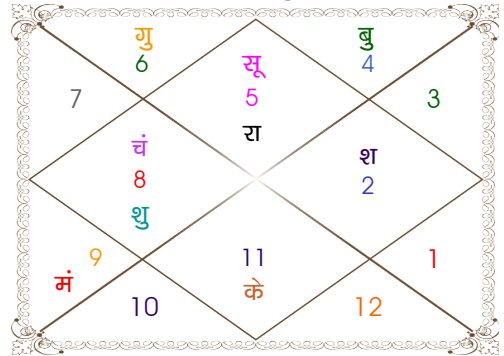
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 08:10:51	वृष 25:54:40
2	मिथुन 08:10:51	मिथुन 20:27:02
3	कर्क 02:43:13	कर्क 14:59:24
4	कर्क 27:15:35	सिंह 09:31:46
5	सिंह 27:15:35	कन्या 14:59:24
6	तुला 02:43:13	तुला 20:27:02
7	वृश्चिक 08:10:51	वृश्चिक 25:54:40
8	धनु 08:10:51	धनु 20:27:02
9	मकर 02:43:13	मकर 14:59:24
10	मकर 27:15:35	कुम्भ 09:31:46
11	कुम्भ 27:15:35	मीन 14:59:24
12	मेष 02:43:13	मेष 20:27:02

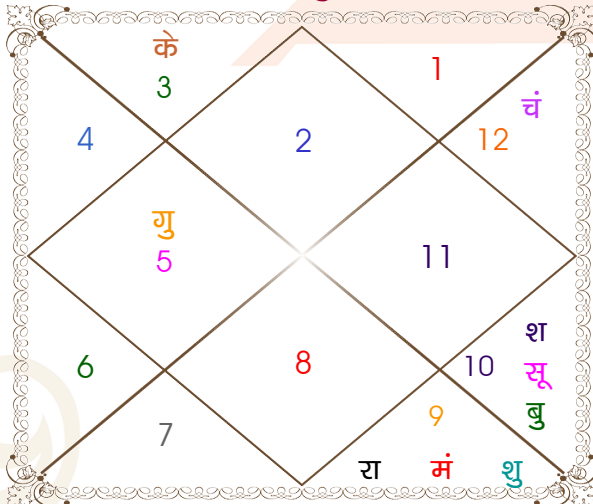
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	25:54:40
2	मिथुन	19:15:37
3	कर्क	12:39:01
4	सिंह	09:31:46
5	कन्या	12:24:58
6	तुला	19:57:23
7	वृश्चिक	25:54:40
8	धनु	19:15:37
9	मकर	12:39:01
10	कुम्भ	09:31:46
11	मीन	12:24:58
12	मेष	19:57:23

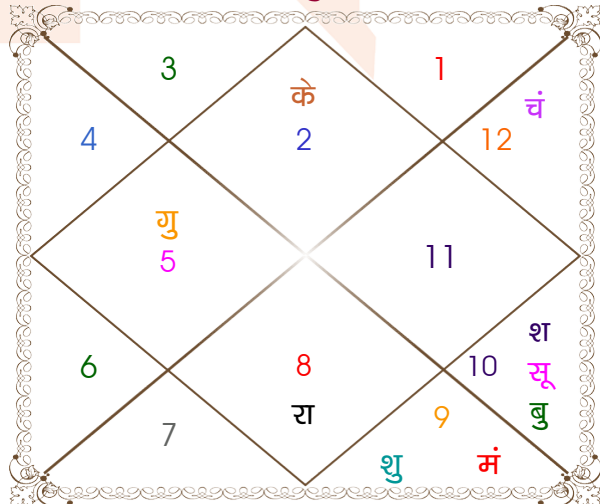
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



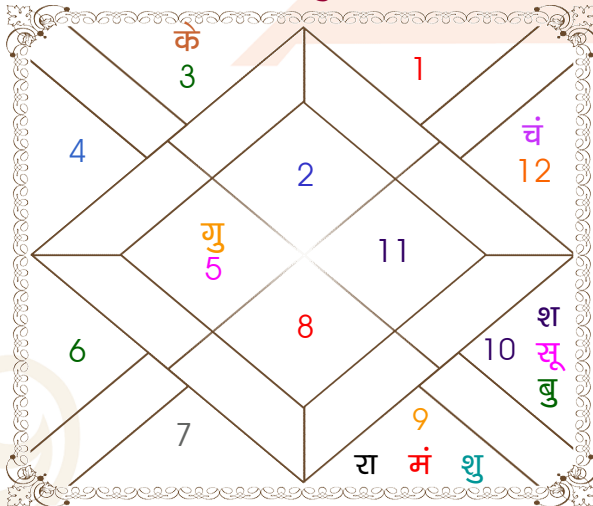
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	खल	निद्रा	2.33	44 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	युवा	निपीदित	प्रकाश	3.31	77 %
मंगल	आत्मा	भातृ	मृत	मुदित	कौतुक	4.19	30 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	निद्रा	0.00	33 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	मुदित	उपवेशन	5.31	61 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	वृद्ध	निपीदित	आगम	1.92	52 %
शनि	ज्ञाति	आयु	युवा	विकल	नृत्यलिप्सा	3.89	62 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	भीत	प्रकाश	0.00	41 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	भीत	उपवेशन	0.00	41 %
कुल						20.95	

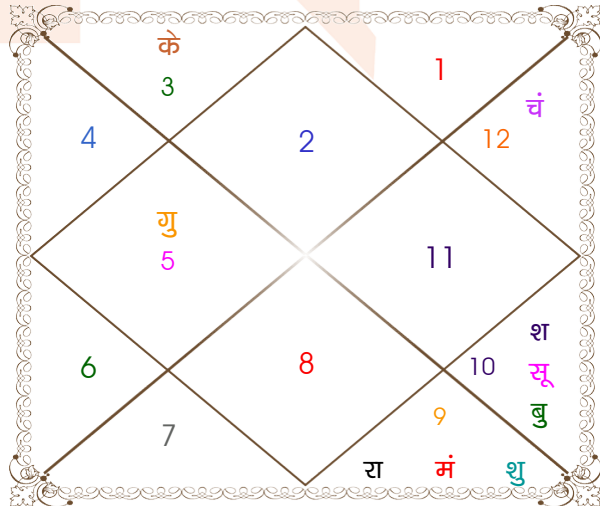
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



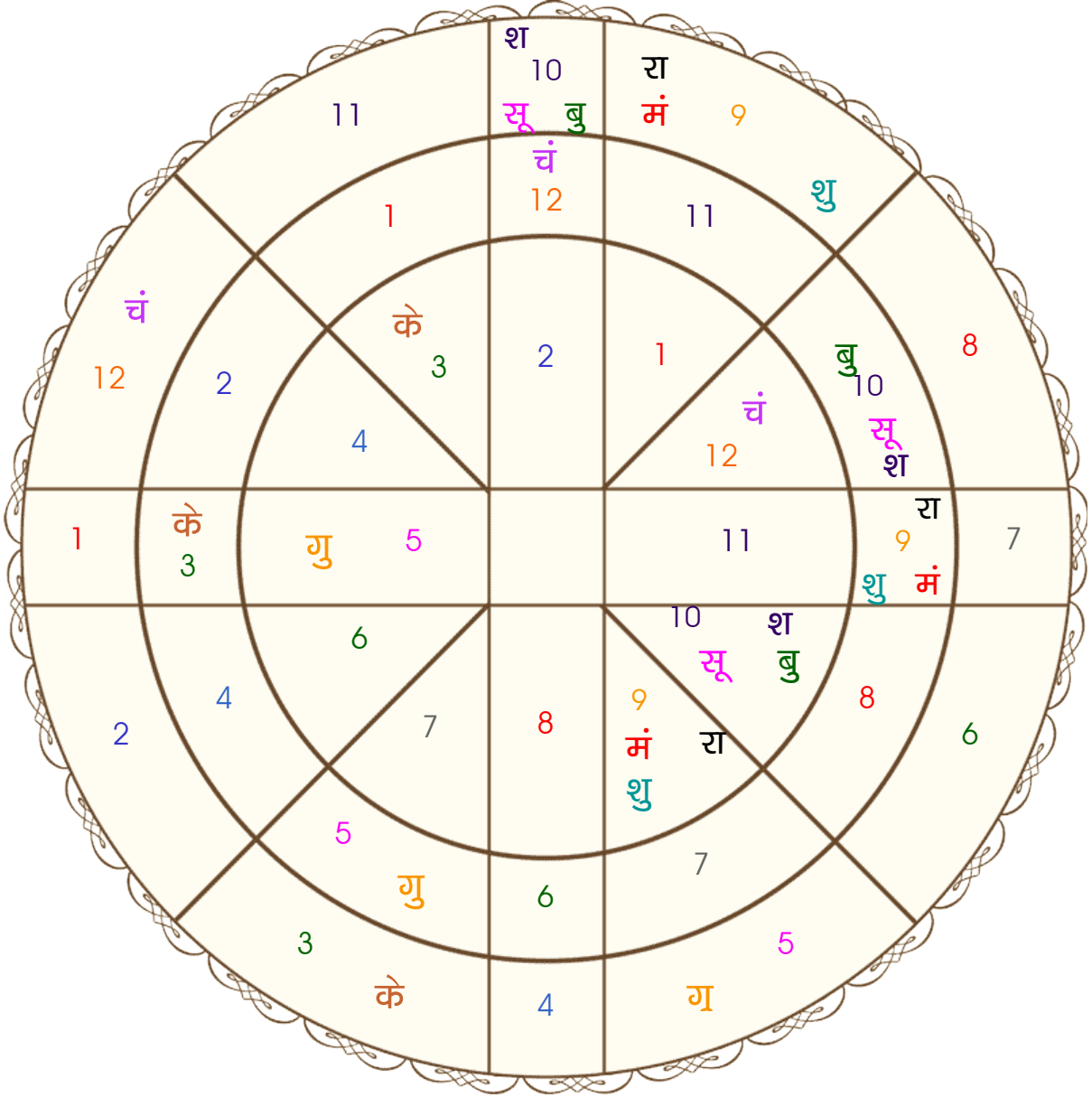
लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

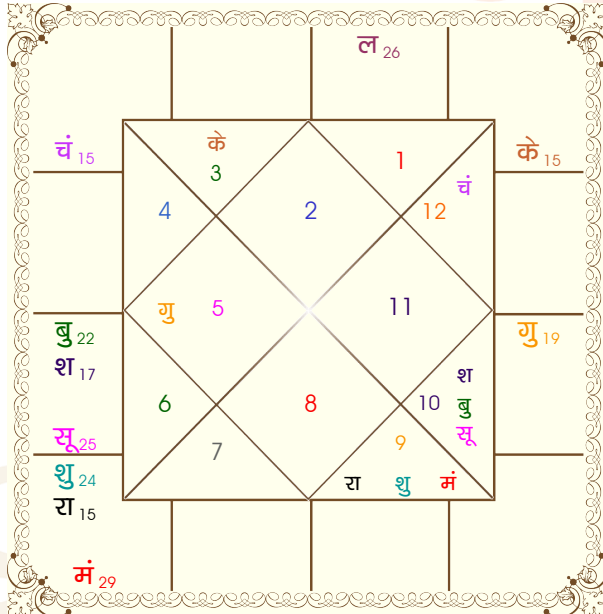
भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 8 मास 15 दिन

ग्रह							निरयण भाव							
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं. प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं. प्र.		
सूर्य		मक	25:09:48	शनि	मंगल	राहु बुध	1	वृष	26:01:11	शुक्र	मंगल	राहु मंगल		
चंद्र		मीन	15:28:01	गुरु	शनि	गुरु बुध	2	मिथु	19:22:08	बुध	राहु	मंगल	राहु	
मंगल		धनु	28:50:11	गुरु	सूर्य	मंगल	बुध	3	कर्क	12:45:32	चंद्र	शनि	मंगल	शुक्र
बुध		मक	22:09:18	शनि	चंद्र	शुक्र	शनि	4	सिंह	09:38:17	सूर्य	केतु	शनि	शनि
गुरु	व	सिंह	18:36:47	सूर्य	शुक्र	राहु	गुरु	5	कन्या	12:31:29	बुध	चंद्र	राहु	शनि
शुक्र		धनु	23:35:22	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	6	तुला	20:03:55	शुक्र	गुरु	गुरु	गुरु
शनि		मक	16:43:08	शनि	चंद्र	शनि	शुक्र	7	वृश्चि	26:01:11	मंगल	बुध	राहु	मंगल
राहु	व	धनु	15:24:23	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध	8	धनु	19:22:08	गुरु	शुक्र	राहु	केतु
केतु	व	मिथु	15:24:23	बुध	राहु	शुक्र	शुक्र	9	मक	12:45:32	शनि	चंद्र	राहु	शनि
हर्ष		धनु	22:14:35	गुरु	शुक्र	शनि	बुध	10	कुंभ	09:38:17	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
नेप		धनु	23:58:49	गुरु	शुक्र	शनि	गुरु	11	मीन	12:31:29	गुरु	शनि	मंगल	बुध
प्लूटो		तुला	29:13:55	शुक्र	गुरु	सूर्य	बुध	12	मेष	20:03:55	मंगल	शुक्र	राहु	मंगल

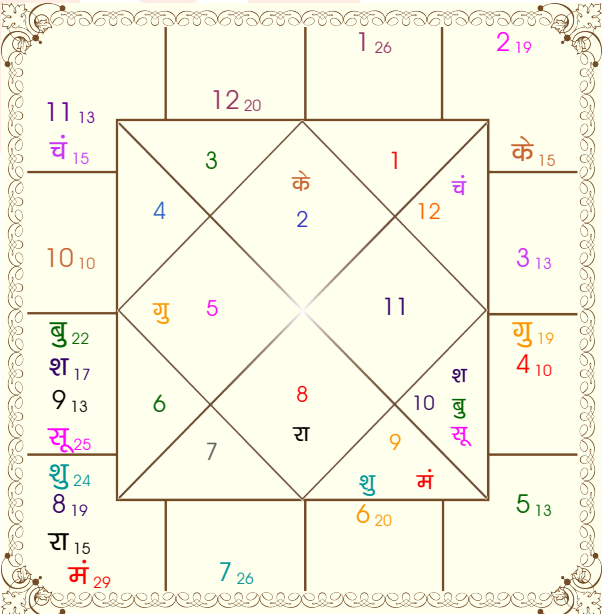
के.पी. अयनांश : 23:38:35

फॉरच्युना : कर्क 16:19:24

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT

Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	गुरु- शुक्र, राहु- केतु,
2	बुध-
3	चंद्र- बुध- शनि-
4	सूर्य- मंगल- गुरु,
5	बुध-
6	गुरु- शुक्र, राहु-
7	सूर्य- मंगल- राहु, केतु,
8	सूर्य, मंगल, गुरु+ शुक्र+ राहु,
9	सूर्य, चंद्र+ मंगल, बुध, शनि,
10	चंद्र- शनि-
11	चंद्र, बुध, गुरु- शनि,
12	सूर्य- मंगल-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 7- 8, 9, 12-
चंद्र	3- 9+ 10- 11,
मंगल	4- 7- 8, 9, 12-
बुध	2- 3- 5- 9, 11,
गुरु	1- 4, 6- 8+ 11-
शुक्र	1, 6, 8+
शनि	3- 9, 10- 11,
राहु	1- 6- 7, 8,
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

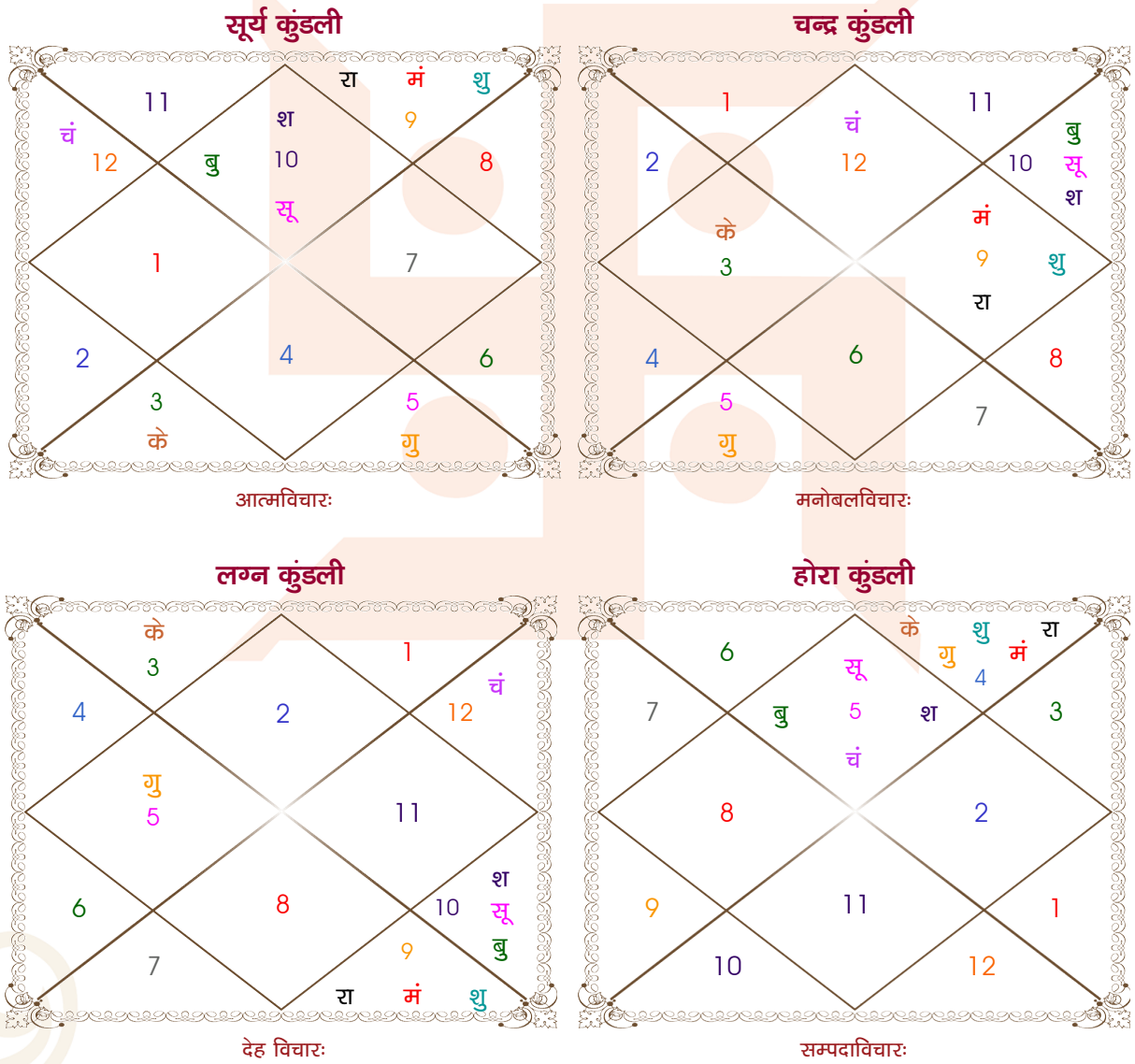


FUTUREPOINT
Astro Solutions



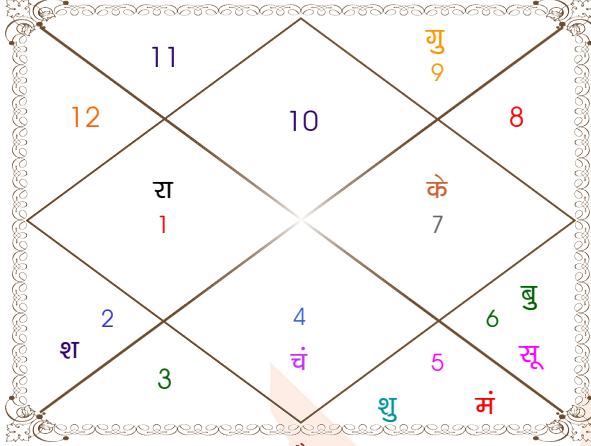
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



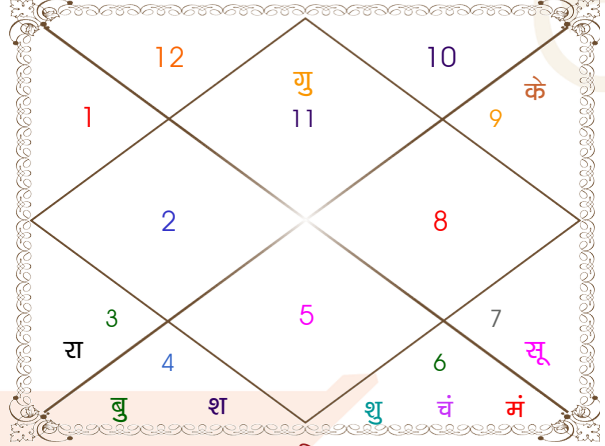
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



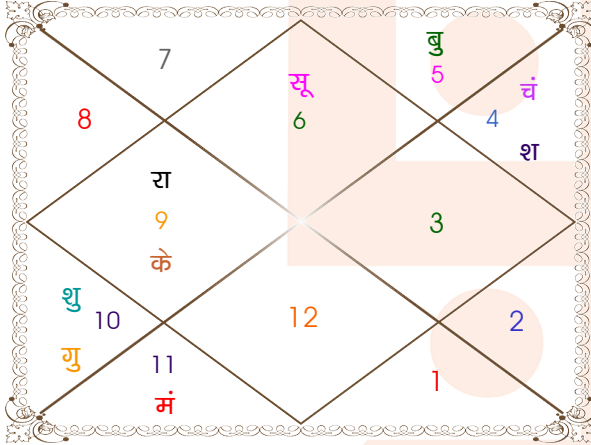
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



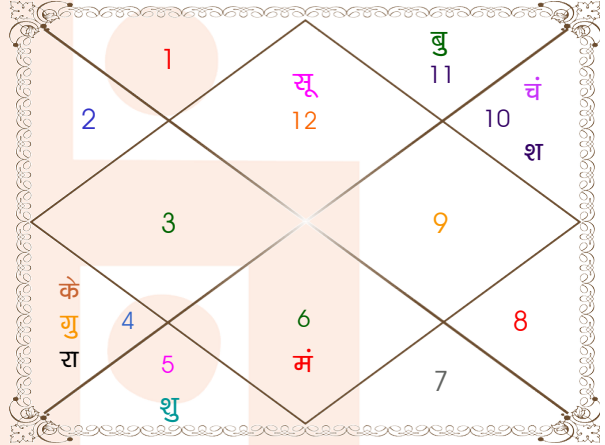
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



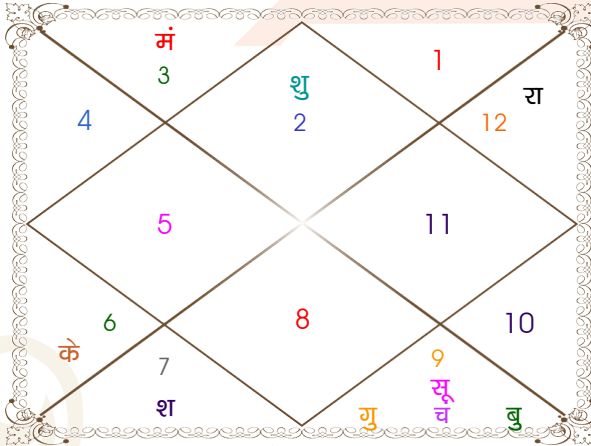
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



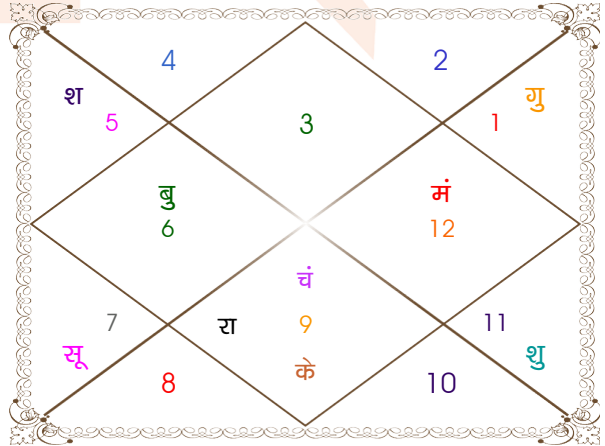
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

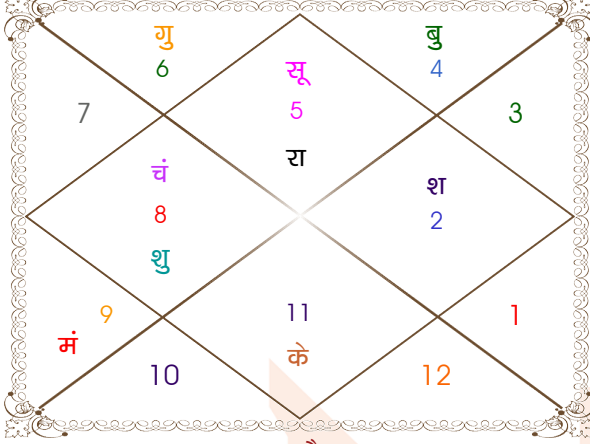


FUTUREPOINT
Astro Solutions



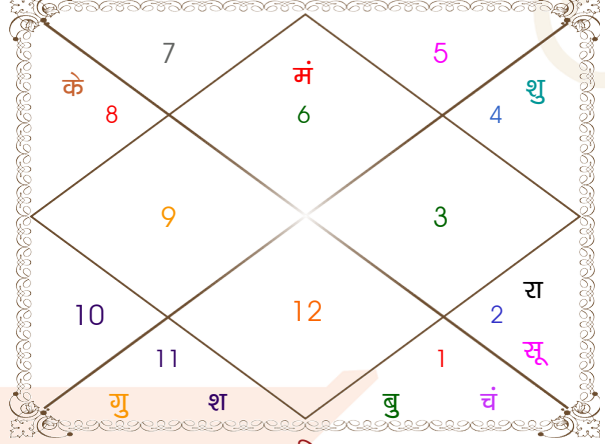
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



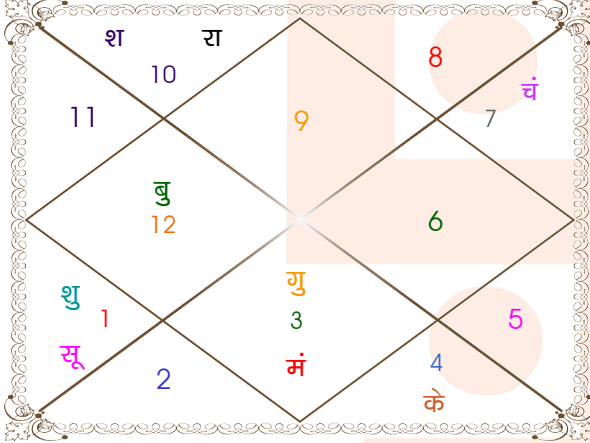
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



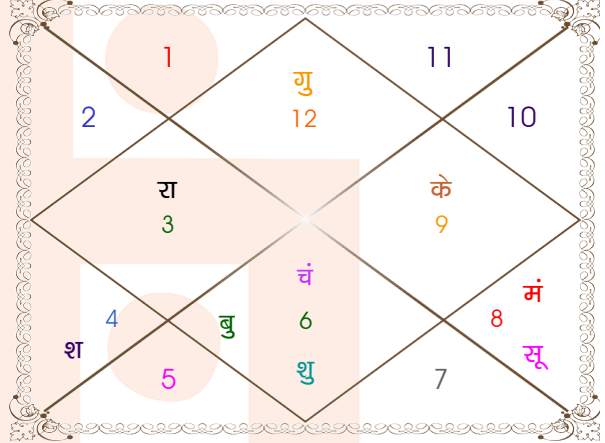
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



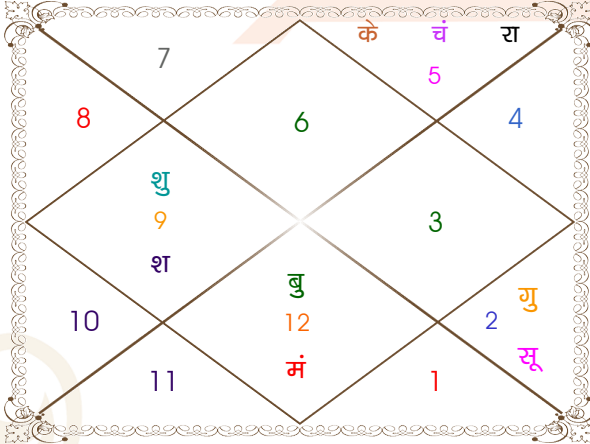
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



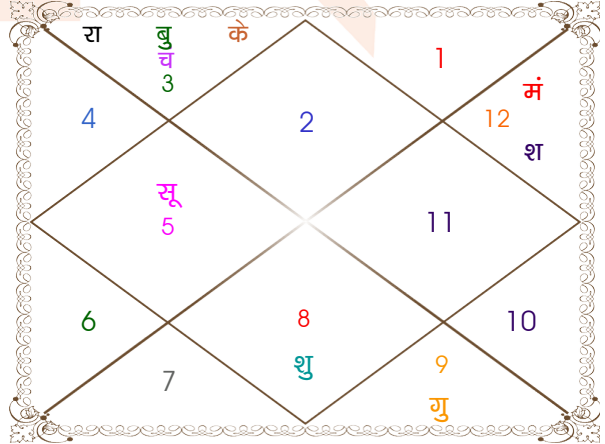
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

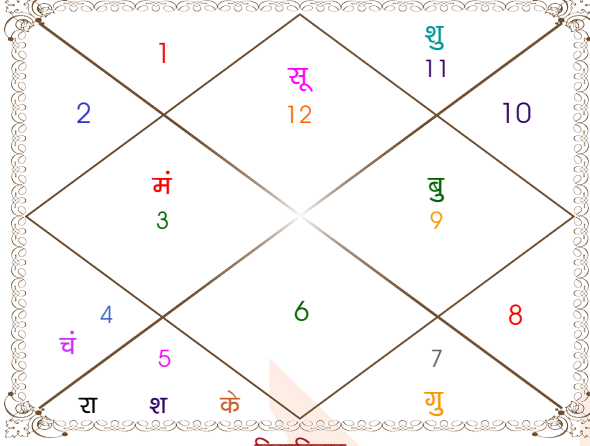


FUTUREPOINT
Astro Solutions



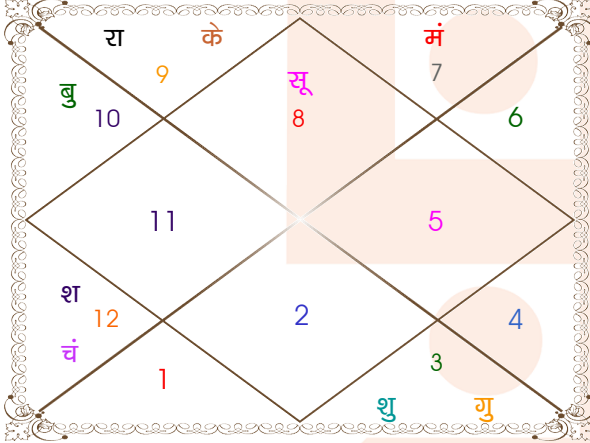
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



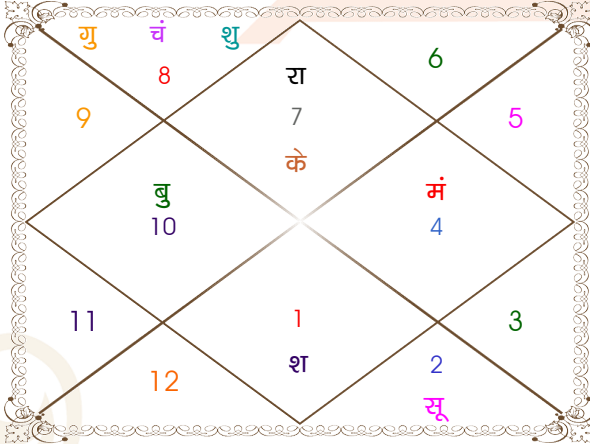
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



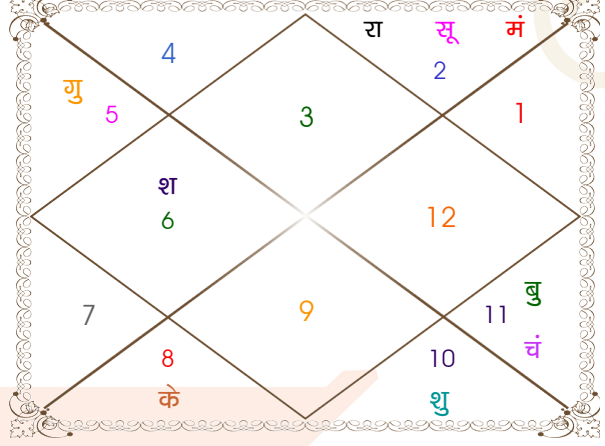
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



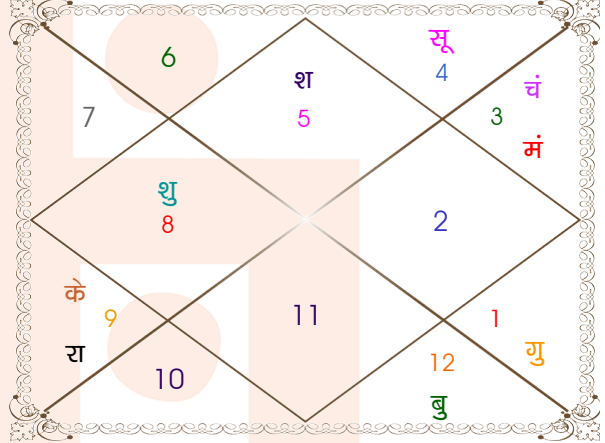
सर्वास्थिति विचारः

सप्तविंशश कुंडली



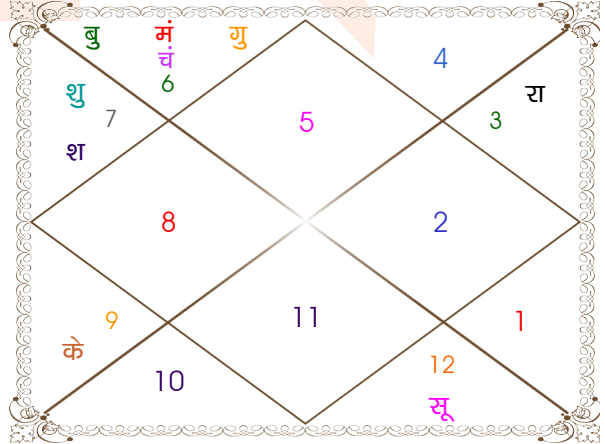
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थिति विचारः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	मक	मीन	धनु	मक	सिंह	धनु	मक	धनु	मिथु
होरा	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मक	कन्या	कर्क	सिंह	कन्या	धनु	सिंह	वृष	मेष	तुला
चतुर्थांश	कुंभ	तुला	कन्या	कन्या	कर्क	कुंभ	कन्या	कर्क	मिथु	धनु
सप्तमांश	वृष	धनु	धनु	मिथु	धनु	धनु	वृष	तुला	मीन	कन्या
नवमांश	सिंह	सिंह	वृश्चि	धनु	कर्क	कन्या	वृश्चि	वृष	सिंह	कुंभ
दशमांश	कन्या	वृष	मेष	कन्या	मेष	कुंभ	कर्क	कुंभ	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मीन	वृश्चि	कन्या	वृश्चि	कन्या	मीन	कन्या	कर्क	मिथु	धनु
षोडशांश	कन्या	वृष	सिंह	मीन	मीन	वृष	धनु	धनु	सिंह	सिंह
विंशांश	वृष	सिंह	मिथु	मीन	मिथु	धनु	वृश्चि	मीन	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	मीन	मीन	कर्क	मिथु	धनु	तुला	कुंभ	सिंह	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	मिथु	वृष	कुंभ	वृष	कुंभ	सिंह	मक	कन्या	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	वृश्चि	वृश्चि	मीन	तुला	मक	मिथु	मिथु	मीन	धनु	धनु
खवेदांश	सिंह	कर्क	मिथु	मिथु	मीन	मेष	वृश्चि	सिंह	धनु	धनु
अक्षवेदांश	तुला	वृष	वृश्चि	कर्क	मक	वृश्चि	वृश्चि	मेष	तुला	तुला
षष्ट्यंश	सिंह	मीन	कन्या	कन्या	कन्या	कन्या	तुला	तुला	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
गुरु	3 व्यंजन	4 चामर	4 गोपुर	5 कन्दुक
शुक्र	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
राहु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.60	13.80	13.25	11.95	11.50	9.55	15.95	8.45	8.60
सप्तवर्ग	12.75	12.95	12.85	11.23	12.38	11.03	15.85	8.48	8.50
दशवर्ग	11.73	14.40	11.73	13.25	9.65	13.55	15.23	10.35	10.58
षोडशवर्ग	12.03	14.73	11.03	11.78	8.48	11.95	14.38	10.30	9.58



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	35	44	50	18	45	29	31
सप्तवर्गज बल	118	101	101	86	109	98	111
ओजयुग्मक बल	15	30	30	0	15	15	0
केन्द्र बल	15	30	30	15	60	30	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	15	15
कुल स्थान बल	183	205	211	119	229	186	172
कुल दिग्बल	55	12	46	19	32	15	43
नतोन्नत बल	55	5	5	60	55	55	5
पक्ष बल	43	86	43	43	17	17	43
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	20	25	2	51	39	1	53
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	194	176	50	154	201	73	146
कुल चेष्टाबल	0	0	10	9	53	20	2
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	3	4	10	2	-41	11	8
कुल षट्बल	496	449	346	328	509	349	380
रूप षट्बल	8.3	7.5	5.8	5.5	8.5	5.8	6.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.7	1.2	1.2	0.8	1.3	1.1	1.3
संबंधित पद	1	4	5	7	2	6	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	23.87	27.20	22.66	12.51	49.08	23.83	8.77
कष्ट फल	33.05	26.20	22.04	46.54	10.11	35.44	40.75

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	349	328	449	496	328	349	346	509	380	380	509	346
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	19	-9	14	20	2	3	35	55	33	43	54	77
कुल भाव बल	398	369	513	516	350	361	441	604	463	452	573	462
रूप भाव बल	6.6	6.1	8.5	8.6	5.8	6.0	7.3	10.1	7.7	7.5	9.5	7.7
संबंधित पद	9	10	4	3	12	11	8	1	5	7	2	6



FUTUREPOINT
Astro Solutions

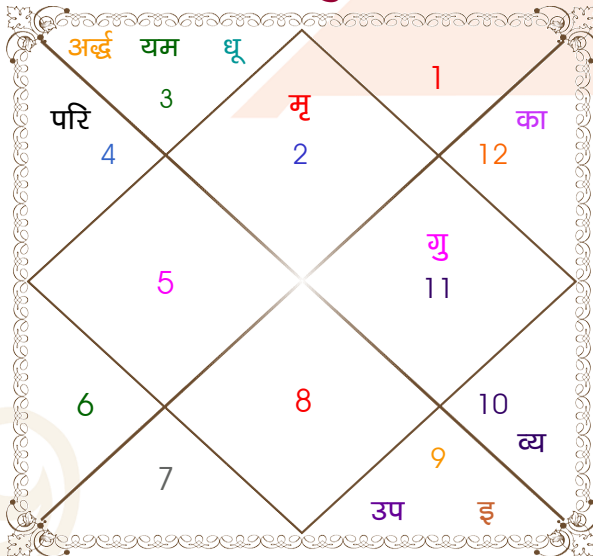


उपग्रह एवं आरुढ़

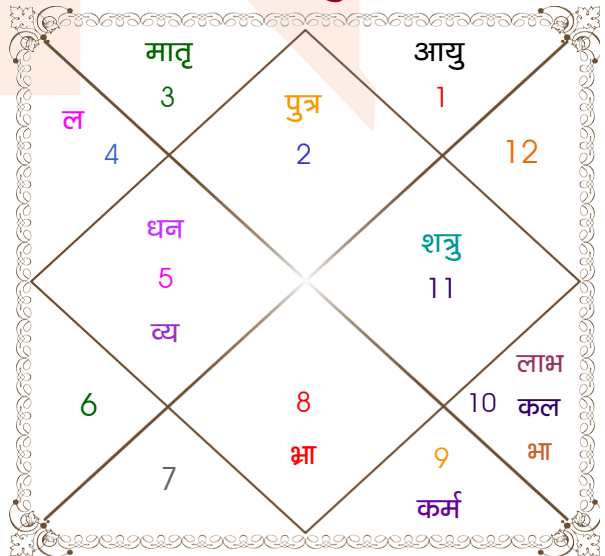
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	25:54:40	--	--	मृगशिरा	1	5
गुलिक	गु	कुंभ	21:01:57	--	मूल	पू०भाद्रपद	1	25
काल	का	मीन	20:45:36	--	--	रेवती	2	27
मृत्यु	मृ	वृष	11:44:33	--	--	रोहिणी	1	4
यमघंटक	यम	मिथु	21:01:20	--	--	पुनर्वसु	1	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	02:29:24	--	मूल	मृगशिरा	3	5
धूम	धू	मिथु	08:23:17	--	--	आर्द्रा	1	6
व्यतिपात	व्य	मक	21:36:43	--	--	श्रवण	4	22
परिवेश	परि	कर्क	21:36:43	--	--	आश्लेषा	2	9
इन्द्रचाप	इ	धनु	08:23:17	उच्च	--	मूल	3	19
उपकेतु	उप	धनु	25:03:17	--	--	पूर्वाषाढ़ा	4	20

प्राणपद	:	मिथु	00:52:44	कारकांश लग्न	:	धनु	18:32:57
भाव लग्न	:	कन्या	02:12:08	होरा लग्न	:	धनु	08:29:37
घटी लग्न	:	वृष	26:30:39	वर्णद लग्न	:	कुंभ	04:24:17

उपग्रह कुंडली



आरुढ़ कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	धकुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1 4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0 3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1 4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0 6
कुल	5	3	3	4	3	4	4	5	4	5	4	4 48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
कुल	7	3	5	4	3	5	4	5	5	1	3	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	धकुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
कुल	1	4	1	4	1	6	4	5	2	2	5	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	धकुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0 4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1 8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1 5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1 6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1 7
कुल	6	3	5	3	3	6	4	5	4	6	3	6 54

गुरु का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	4	7	6	5	2	6	4	5	4	5	5	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	धकुल
शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	4	3	3	7	4	6	4	3	5	4	4	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	धकुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0 4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1 4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0 6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0 3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1 6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0 3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0 6
कुल	3	3	2	2	5	3	3	4	2	5	5	2 39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	2	4	2	5	4	5	5	6	4	5	49



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	3	3	4	2	5	5	2	3	3	2	39
गुरु	4	5	5	3	4	7	6	5	2	6	4	5	56
मंगल	1	6	4	5	2	2	5	4	1	4	1	4	39
सूर्य	4	3	4	4	5	4	5	4	4	5	3	3	48
शुक्र	4	6	4	3	5	4	4	5	4	3	3	7	52
बुध	3	3	6	4	5	4	6	3	6	6	3	5	54
चंद्र	3	5	4	3	5	4	5	5	1	3	4	7	49
बिन्दु	21	33	30	25	30	27	36	31	20	30	21	33	337
रेखा	35	23	26	31	26	29	20	25	36	26	35	23	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	3	0	1	2	0	2	3	0	1	0	0	12
गुरु	2	0	1	0	2	2	2	2	0	1	0	2	14
मंगल	0	4	3	1	1	0	4	0	0	2	0	0	15
सूर्य	0	0	1	1	1	1	2	1	0	2	0	0	9
शुक्र	0	3	1	0	1	1	1	2	0	0	0	4	13
बुध	0	0	3	1	2	1	3	0	3	3	0	2	18
चंद्र	2	2	0	0	4	1	1	2	0	0	0	4	16
रेखा	4	12	9	4	13	6	15	10	3	9	0	12	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	1	2	0	2	3	0	1	0	0	10
गुरु	0	0	1	0	2	1	2	0	0	1	0	2	9
मंगल	0	0	3	1	1	0	0	0	0	2	0	0	7
सूर्य	0	0	0	1	1	0	2	1	0	2	0	0	7
शुक्र	0	2	0	0	1	0	1	2	0	0	0	4	10
बुध	0	0	2	1	2	1	3	0	3	3	0	2	17
चंद्र	0	1	0	0	4	1	1	0	0	0	0	4	11
रेखा	0	4	6	4	13	3	11	6	3	9	0	12	71

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	46	110	48	132	76	101	77
ग्रह पिंड	40	60	40	120	45	30	35
शोध्य पिंड	86	170	88	252	121	131	112



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 10 मास 11 दिन

शनि 19 वर्ष 08/02/1992 20/12/1993	बुध 17 वर्ष 20/12/1993 20/12/2010	केतु 7 वर्ष 20/12/2010 20/12/2017	शुक्र 20 वर्ष 20/12/2017 20/12/2037	सूर्य 6 वर्ष 20/12/2037 20/12/2043
00/00/0000	बुध 18/05/1996	केतु 18/05/2011	शुक्र 20/04/2021	सूर्य 09/04/2038
00/00/0000	केतु 15/05/1997	शुक्र 17/07/2012	सूर्य 21/04/2022	चंद्र 08/10/2038
00/00/0000	शुक्र 15/03/2000	सूर्य 22/11/2012	चंद्र 20/12/2023	मंगल 13/02/2039
00/00/0000	सूर्य 19/01/2001	चंद्र 23/06/2013	मंगल 19/02/2025	राहु 08/01/2040
00/00/0000	चंद्र 21/06/2002	मंगल 20/11/2013	राहु 19/02/2028	गुरु 26/10/2040
00/00/0000	मंगल 18/06/2003	राहु 08/12/2014	गुरु 20/10/2030	शनि 08/10/2041
00/00/0000	राहु 04/01/2006	गुरु 14/11/2015	शनि 20/12/2033	बुध 14/08/2042
08/02/1992	गुरु 11/04/2008	शनि 23/12/2016	बुध 20/10/2036	केतु 20/12/2042
गुरु 20/12/1993	शनि 20/12/2010	बुध 20/12/2017	केतु 20/12/2037	शुक्र 20/12/2043
चंद्र 10 वर्ष 20/12/2043 20/12/2053	मंगल 7 वर्ष 20/12/2053 20/12/2060	राहु 18 वर्ष 20/12/2060 20/12/2078	गुरु 16 वर्ष 20/12/2078 20/12/2094	शनि 19 वर्ष 20/12/2094 09/02/2112
चंद्र 20/10/2044	मंगल 18/05/2054	राहु 02/09/2063	गुरु 06/02/2081	शनि 23/12/2097
मंगल 21/05/2045	राहु 06/06/2055	गुरु 26/01/2066	शनि 21/08/2083	बुध 02/09/2100
राहु 20/11/2046	गुरु 12/05/2056	शनि 01/12/2068	बुध 26/11/2085	केतु 12/10/2101
गुरु 21/03/2048	शनि 20/06/2057	बुध 21/06/2071	केतु 02/11/2086	शुक्र 12/12/2104
शनि 20/10/2049	बुध 18/06/2058	केतु 08/07/2072	शुक्र 03/07/2089	सूर्य 24/11/2105
बुध 22/03/2051	केतु 14/11/2058	शुक्र 09/07/2075	सूर्य 21/04/2090	चंद्र 25/06/2107
केतु 21/10/2051	शुक्र 14/01/2060	सूर्य 02/06/2076	चंद्र 21/08/2091	मंगल 03/08/2108
शुक्र 20/06/2053	सूर्य 21/05/2060	चंद्र 02/12/2077	मंगल 27/07/2092	राहु 10/06/2111
सूर्य 20/12/2053	चंद्र 20/12/2060	मंगल 20/12/2078	राहु 20/12/2094	गुरु 09/02/2112

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 10 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु 08/02/1992 20/12/1993	बुध - बुध 20/12/1993 18/05/1996	बुध - केतु 18/05/1996 15/05/1997	बुध - शुक्र 15/05/1997 15/03/2000	बुध - सूर्य 15/03/2000 19/01/2001
08/02/1992 शनि 05/03/1992 बुध 14/07/1992 केतु 06/09/1992 शुक्र 07/02/1993 सूर्य 25/03/1993 चंद्र 10/06/1993 मंगल 03/08/1993 राहु 20/12/1993	बुध 24/04/1994 केतु 14/06/1994 शुक्र 08/11/1994 सूर्य 21/12/1994 चंद्र 05/03/1995 मंगल 25/04/1995 राहु 04/09/1995 गुरु 30/12/1995 शनि 18/05/1996	केतु 08/06/1996 शुक्र 07/08/1996 सूर्य 25/08/1996 चंद्र 24/09/1996 मंगल 16/10/1996 राहु 09/12/1996 गुरु 26/01/1997 शनि 25/03/1997 बुध 15/05/1997	शुक्र 03/11/1997 सूर्य 25/12/1997 चंद्र 21/03/1998 मंगल 21/05/1998 राहु 23/10/1998 गुरु 10/03/1999 शनि 21/08/1999 बुध 14/01/2000 केतु 15/03/2000	सूर्य 30/03/2000 चंद्र 25/04/2000 मंगल 13/05/2000 राहु 29/06/2000 गुरु 09/08/2000 शनि 27/09/2000 बुध 10/11/2000 केतु 28/11/2000 शुक्र 19/01/2001
बुध - चंद्र 19/01/2001 21/06/2002	बुध - मंगल 21/06/2002 18/06/2003	बुध - राहु 18/06/2003 04/01/2006	बुध - गुरु 04/01/2006 11/04/2008	बुध - शनि 11/04/2008 20/12/2010
चंद्र 03/03/2001 मंगल 02/04/2001 राहु 19/06/2001 गुरु 27/08/2001 शनि 17/11/2001 बुध 29/01/2002 केतु 28/02/2002 शुक्र 26/05/2002 सूर्य 21/06/2002	मंगल 12/07/2002 राहु 04/09/2002 गुरु 22/10/2002 शनि 19/12/2002 बुध 08/02/2003 केतु 01/03/2003 शुक्र 01/05/2003 सूर्य 19/05/2003 चंद्र 18/06/2003	राहु 05/11/2003 गुरु 08/03/2004 शनि 02/08/2004 बुध 12/12/2004 केतु 04/02/2005 शुक्र 10/07/2005 सूर्य 25/08/2005 चंद्र 11/11/2005 मंगल 04/01/2006	गुरु 25/04/2006 शनि 03/09/2006 बुध 29/12/2006 केतु 15/02/2007 शुक्र 03/07/2007 सूर्य 14/08/2007 चंद्र 22/10/2007 मंगल 09/12/2007 राहु 11/04/2008	शनि 14/09/2008 बुध 31/01/2009 केतु 29/03/2009 शुक्र 09/09/2009 सूर्य 28/10/2009 चंद्र 18/01/2010 मंगल 17/03/2010 राहु 11/08/2010 गुरु 20/12/2010
केतु - केतु 20/12/2010 18/05/2011	केतु - शुक्र 18/05/2011 17/07/2012	केतु - सूर्य 17/07/2012 22/11/2012	केतु - चंद्र 22/11/2012 23/06/2013	केतु - मंगल 23/06/2013 20/11/2013
केतु 29/12/2010 शुक्र 23/01/2011 सूर्य 30/01/2011 चंद्र 12/02/2011 मंगल 20/02/2011 राहु 15/03/2011 गुरु 04/04/2011 शनि 27/04/2011 बुध 18/05/2011	शुक्र 28/07/2011 सूर्य 19/08/2011 चंद्र 23/09/2011 मंगल 18/10/2011 राहु 21/12/2011 गुरु 16/02/2012 शनि 23/04/2012 बुध 23/06/2012 केतु 17/07/2012	सूर्य 24/07/2012 चंद्र 04/08/2012 मंगल 11/08/2012 राहु 30/08/2012 गुरु 16/09/2012 शनि 06/10/2012 बुध 25/10/2012 केतु 01/11/2012 शुक्र 22/11/2012	चंद्र 10/12/2012 मंगल 23/12/2012 राहु 23/01/2013 गुरु 21/02/2013 शनि 27/03/2013 बुध 26/04/2013 केतु 08/05/2013 शुक्र 13/06/2013 सूर्य 23/06/2013	मंगल 02/07/2013 राहु 24/07/2013 गुरु 13/08/2013 शनि 06/09/2013 बुध 27/09/2013 केतु 06/10/2013 शुक्र 31/10/2013 सूर्य 07/11/2013 चंद्र 20/11/2013



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु 20/11/2013 08/12/2014	केतु - गुरु 08/12/2014 14/11/2015	केतु - शनि 14/11/2015 23/12/2016	केतु - बुध 23/12/2016 20/12/2017	शुक्र - शुक्र 20/12/2017 20/04/2021
राहु 16/01/2014 गुरु 08/03/2014 शनि 08/05/2014 बुध 01/07/2014 केतु 24/07/2014 शुक्र 26/09/2014 सूर्य 15/10/2014 चंद्र 16/11/2014 मंगल 08/12/2014	गुरु 23/01/2015 शनि 17/03/2015 बुध 05/05/2015 केतु 25/05/2015 शुक्र 20/07/2015 सूर्य 07/08/2015 चंद्र 04/09/2015 मंगल 24/09/2015 राहु 14/11/2015	शनि 17/01/2016 बुध 14/03/2016 केतु 07/04/2016 शुक्र 13/06/2016 सूर्य 04/07/2016 चंद्र 06/08/2016 मंगल 30/08/2016 राहु 30/10/2016 गुरु 23/12/2016	बुध 12/02/2017 केतु 05/03/2017 शुक्र 05/05/2017 सूर्य 23/05/2017 चंद्र 22/06/2017 मंगल 13/07/2017 राहु 05/09/2017 गुरु 24/10/2017 शनि 20/12/2017	शुक्र 11/07/2018 सूर्य 10/09/2018 चंद्र 20/12/2018 मंगल 01/03/2019 राहु 31/08/2019 गुरु 09/02/2020 शनि 20/08/2020 बुध 08/02/2021 केतु 20/04/2021
शुक्र - सूर्य 20/04/2021 21/04/2022	शुक्र - चंद्र 21/04/2022 20/12/2023	शुक्र - मंगल 20/12/2023 19/02/2025	शुक्र - राहु 19/02/2025 19/02/2028	शुक्र - गुरु 19/02/2028 20/10/2030
सूर्य 09/05/2021 चंद्र 08/06/2021 मंगल 29/06/2021 राहु 23/08/2021 गुरु 11/10/2021 शनि 08/12/2021 बुध 29/01/2022 केतु 19/02/2022 शुक्र 21/04/2022	चंद्र 10/06/2022 मंगल 16/07/2022 राहु 15/10/2022 गुरु 04/01/2023 शनि 11/04/2023 बुध 06/07/2023 केतु 11/08/2023 शुक्र 20/11/2023 सूर्य 20/12/2023	मंगल 14/01/2024 राहु 18/03/2024 गुरु 14/05/2024 शनि 21/07/2024 बुध 19/09/2024 केतु 14/10/2024 शुक्र 24/12/2024 सूर्य 14/01/2025 चंद्र 19/02/2025	राहु 02/08/2025 गुरु 26/12/2025 शनि 18/06/2026 बुध 20/11/2026 केतु 23/01/2027 शुक्र 24/07/2027 सूर्य 17/09/2027 चंद्र 17/12/2027 मंगल 19/02/2028	गुरु 28/06/2028 शनि 29/11/2028 बुध 16/04/2029 केतु 12/06/2029 शुक्र 22/11/2029 सूर्य 09/01/2030 चंद्र 31/03/2030 मंगल 27/05/2030 राहु 20/10/2030
शुक्र - शनि 20/10/2030 20/12/2033	शुक्र - बुध 20/12/2033 20/10/2036	शुक्र - केतु 20/10/2036 20/12/2037	सूर्य - सूर्य 20/12/2037 09/04/2038	सूर्य - चंद्र 09/04/2038 08/10/2038
शनि 21/04/2031 बुध 02/10/2031 केतु 09/12/2031 शुक्र 19/06/2032 सूर्य 15/08/2032 चंद्र 20/11/2032 मंगल 26/01/2033 राहु 19/07/2033 गुरु 20/12/2033	बुध 16/05/2034 केतु 15/07/2034 शुक्र 03/01/2035 सूर्य 24/02/2035 चंद्र 21/05/2035 मंगल 21/07/2035 राहु 23/12/2035 गुरु 09/05/2036 शनि 20/10/2036	केतु 14/11/2036 शुक्र 24/01/2037 सूर्य 14/02/2037 चंद्र 22/03/2037 मंगल 15/04/2037 राहु 18/06/2037 गुरु 14/08/2037 शनि 21/10/2037 बुध 20/12/2037	सूर्य 25/12/2037 चंद्र 04/01/2038 मंगल 10/01/2038 राहु 26/01/2038 गुरु 10/02/2038 शनि 27/02/2038 बुध 15/03/2038 केतु 21/03/2038 शुक्र 09/04/2038	चंद्र 24/04/2038 मंगल 04/05/2038 राहु 01/06/2038 गुरु 25/06/2038 शनि 24/07/2038 बुध 19/08/2038 केतु 30/08/2038 शुक्र 29/09/2038 सूर्य 08/10/2038

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल 08/10/2038 13/02/2039	सूर्य - राहु 13/02/2039 08/01/2040	सूर्य - गुरु 08/01/2040 26/10/2040	सूर्य - शनि 26/10/2040 08/10/2041	सूर्य - बुध 08/10/2041 14/08/2042
मंगल 16/10/2038 राहु 04/11/2038 गुरु 21/11/2038 शनि 11/12/2038 बुध 29/12/2038 केतु 06/01/2039 शुक्र 27/01/2039 सूर्य 02/02/2039 चंद्र 13/02/2039	राहु 03/04/2039 गुरु 17/05/2039 शनि 08/07/2039 बुध 24/08/2039 केतु 12/09/2039 शुक्र 06/11/2039 सूर्य 22/11/2039 चंद्र 20/12/2039 मंगल 08/01/2040	गुरु 16/02/2040 शनि 02/04/2040 बुध 13/05/2040 केतु 30/05/2040 शुक्र 18/07/2040 सूर्य 02/08/2040 चंद्र 26/08/2040 मंगल 12/09/2040 राहु 26/10/2040	शनि 20/12/2040 बुध 07/02/2041 केतु 27/02/2041 शुक्र 26/04/2041 सूर्य 13/05/2041 चंद्र 11/06/2041 मंगल 02/07/2041 राहु 23/08/2041 गुरु 08/10/2041	बुध 21/11/2041 केतु 09/12/2041 शुक्र 30/01/2042 सूर्य 14/02/2042 चंद्र 12/03/2042 मंगल 30/03/2042 राहु 16/05/2042 गुरु 26/06/2042 शनि 14/08/2042
सूर्य - केतु 14/08/2042 20/12/2042	सूर्य - शुक्र 20/12/2042 20/12/2043	चंद्र - चंद्र 20/12/2043 20/10/2044	चंद्र - मंगल 20/10/2044 21/05/2045	चंद्र - राहु 21/05/2045 20/11/2046
केतु 22/08/2042 शुक्र 12/09/2042 सूर्य 19/09/2042 चंद्र 29/09/2042 मंगल 07/10/2042 राहु 26/10/2042 गुरु 12/11/2042 शनि 02/12/2042 बुध 20/12/2042	शुक्र 19/02/2043 सूर्य 09/03/2043 चंद्र 09/04/2043 मंगल 30/04/2043 राहु 24/06/2043 गुरु 12/08/2043 शनि 08/10/2043 बुध 29/11/2043 केतु 20/12/2043	चंद्र 15/01/2044 मंगल 02/02/2044 राहु 18/03/2044 गुरु 28/04/2044 शनि 15/06/2044 बुध 28/07/2044 केतु 15/08/2044 शुक्र 05/10/2044 सूर्य 20/10/2044	मंगल 01/11/2044 राहु 03/12/2044 गुरु 01/01/2045 शनि 03/02/2045 बुध 06/03/2045 केतु 18/03/2045 शुक्र 23/04/2045 सूर्य 03/05/2045 चंद्र 21/05/2045	राहु 11/08/2045 गुरु 23/10/2045 शनि 18/01/2046 बुध 06/04/2046 केतु 07/05/2046 शुक्र 07/08/2046 सूर्य 03/09/2046 चंद्र 19/10/2046 मंगल 20/11/2046
चंद्र - गुरु 20/11/2046 21/03/2048	चंद्र - शनि 21/03/2048 20/10/2049	चंद्र - बुध 20/10/2049 22/03/2051	चंद्र - केतु 22/03/2051 21/10/2051	चंद्र - शुक्र 21/10/2051 20/06/2053
गुरु 24/01/2047 शनि 11/04/2047 बुध 19/06/2047 केतु 17/07/2047 शुक्र 06/10/2047 सूर्य 31/10/2047 चंद्र 10/12/2047 मंगल 08/01/2048 राहु 21/03/2048	शनि 20/06/2048 बुध 10/09/2048 केतु 14/10/2048 शुक्र 18/01/2049 सूर्य 16/02/2049 चंद्र 06/04/2049 मंगल 09/05/2049 राहु 04/08/2049 गुरु 20/10/2049	बुध 01/01/2050 केतु 01/02/2050 शुक्र 28/04/2050 सूर्य 24/05/2050 चंद्र 06/07/2050 मंगल 05/08/2050 राहु 22/10/2050 गुरु 30/12/2050 शनि 22/03/2051	केतु 03/04/2051 शुक्र 08/05/2051 सूर्य 19/05/2051 चंद्र 06/06/2051 मंगल 18/06/2051 राहु 20/07/2051 गुरु 18/08/2051 शनि 20/09/2051 बुध 21/10/2051	शुक्र 30/01/2052 सूर्य 29/02/2052 चंद्र 20/04/2052 मंगल 26/05/2052 राहु 25/08/2052 गुरु 14/11/2052 शनि 19/02/2053 बुध 16/05/2053 केतु 20/06/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य 20/06/2053 20/12/2053	मंगल - मंगल 20/12/2053 18/05/2054	मंगल - राहु 18/05/2054 06/06/2055	मंगल - गुरु 06/06/2055 12/05/2056	मंगल - शनि 12/05/2056 20/06/2057
सूर्य 29/06/2053 चंद्र 15/07/2053 मंगल 25/07/2053 राहु 22/08/2053 गुरु 15/09/2053 शनि 14/10/2053 बुध 09/11/2053 केतु 20/11/2053 शुक्र 20/12/2053	मंगल 29/12/2053 राहु 20/01/2054 गुरु 09/02/2054 शनि 05/03/2054 बुध 26/03/2054 केतु 03/04/2054 शुक्र 28/04/2054 सूर्य 06/05/2054 चंद्र 18/05/2054	राहु 15/07/2054 गुरु 04/09/2054 शनि 04/11/2054 बुध 28/12/2054 केतु 19/01/2055 शुक्र 24/03/2055 सूर्य 12/04/2055 चंद्र 14/05/2055 मंगल 06/06/2055	गुरु 21/07/2055 शनि 13/09/2055 बुध 31/10/2055 केतु 20/11/2055 शुक्र 16/01/2056 सूर्य 02/02/2056 चंद्र 02/03/2056 मंगल 21/03/2056 राहु 12/05/2056	शनि 15/07/2056 बुध 10/09/2056 केतु 04/10/2056 शुक्र 10/12/2056 सूर्य 30/12/2056 चंद्र 02/02/2057 मंगल 26/02/2057 राहु 27/04/2057 गुरु 20/06/2057
मंगल - बुध 20/06/2057 18/06/2058	मंगल - केतु 18/06/2058 14/11/2058	मंगल - शुक्र 14/11/2058 14/01/2060	मंगल - सूर्य 14/01/2060 21/05/2060	मंगल - चंद्र 21/05/2060 20/12/2060
बुध 11/08/2057 केतु 01/09/2057 शुक्र 31/10/2057 सूर्य 18/11/2057 चंद्र 18/12/2057 मंगल 09/01/2058 राहु 04/03/2058 गुरु 21/04/2058 शनि 18/06/2058	केतु 26/06/2058 शुक्र 21/07/2058 सूर्य 29/07/2058 चंद्र 10/08/2058 मंगल 19/08/2058 राहु 10/09/2058 गुरु 30/09/2058 शनि 24/10/2058 बुध 14/11/2058	शुक्र 24/01/2059 सूर्य 14/02/2059 चंद्र 22/03/2059 मंगल 15/04/2059 राहु 18/06/2059 गुरु 14/08/2059 शनि 21/10/2059 बुध 20/12/2059 केतु 14/01/2060	सूर्य 20/01/2060 चंद्र 31/01/2060 मंगल 07/02/2060 राहु 27/02/2060 गुरु 15/03/2060 शनि 04/04/2060 बुध 22/04/2060 केतु 29/04/2060 शुक्र 21/05/2060	चंद्र 07/06/2060 मंगल 20/06/2060 राहु 22/07/2060 गुरु 19/08/2060 शनि 22/09/2060 बुध 22/10/2060 केतु 04/11/2060 शुक्र 09/12/2060 सूर्य 20/12/2060
राहु - राहु 20/12/2060 02/09/2063	राहु - गुरु 02/09/2063 26/01/2066	राहु - शनि 26/01/2066 01/12/2068	राहु - बुध 01/12/2068 21/06/2071	राहु - केतु 21/06/2071 08/07/2072
राहु 17/05/2061 गुरु 25/09/2061 शनि 28/02/2062 बुध 18/07/2062 केतु 14/09/2062 शुक्र 25/02/2063 सूर्य 15/04/2063 चंद्र 06/07/2063 मंगल 02/09/2063	गुरु 28/12/2063 शनि 15/05/2064 बुध 16/09/2064 केतु 06/11/2064 शुक्र 01/04/2065 सूर्य 15/05/2065 चंद्र 27/07/2065 मंगल 16/09/2065 राहु 26/01/2066	शनि 09/07/2066 बुध 04/12/2066 केतु 03/02/2067 शुक्र 26/07/2067 सूर्य 16/09/2067 चंद्र 12/12/2067 मंगल 11/02/2068 राहु 16/07/2068 गुरु 01/12/2068	बुध 12/04/2069 केतु 06/06/2069 शुक्र 08/11/2069 सूर्य 25/12/2069 चंद्र 12/03/2070 मंगल 05/05/2070 राहु 22/09/2070 गुरु 24/01/2071 शनि 21/06/2071	केतु 13/07/2071 शुक्र 15/09/2071 सूर्य 04/10/2071 चंद्र 05/11/2071 मंगल 28/11/2071 राहु 24/01/2072 गुरु 15/03/2072 शनि 15/05/2072 बुध 08/07/2072



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र 08/07/2072 09/07/2075	राहु - सूर्य 09/07/2075 02/06/2076	राहु - चंद्र 02/06/2076 02/12/2077	राहु - मंगल 02/12/2077 20/12/2078	गुरु - गुरु 20/12/2078 06/02/2081
शुक्र 07/01/2073 सूर्य 03/03/2073 चंद्र 02/06/2073 मंगल 05/08/2073 राहु 16/01/2074 गुरु 11/06/2074 शनि 02/12/2074 बुध 06/05/2075 केतु 09/07/2075	सूर्य 26/07/2075 चंद्र 22/08/2075 मंगल 10/09/2075 राहु 29/10/2075 गुरु 12/12/2075 शनि 02/02/2076 बुध 20/03/2076 केतु 08/04/2076 शुक्र 02/06/2076	चंद्र 17/07/2076 मंगल 18/08/2076 राहु 09/11/2076 गुरु 21/01/2077 शनि 17/04/2077 बुध 04/07/2077 केतु 05/08/2077 शुक्र 04/11/2077 सूर्य 02/12/2077	मंगल 24/12/2077 राहु 20/02/2078 गुरु 12/04/2078 शनि 11/06/2078 बुध 05/08/2078 केतु 27/08/2078 शुक्र 30/10/2078 सूर्य 18/11/2078 चंद्र 20/12/2078	गुरु 03/04/2079 शनि 04/08/2079 बुध 23/11/2079 केतु 07/01/2080 शुक्र 16/05/2080 सूर्य 24/06/2080 चंद्र 28/08/2080 मंगल 13/10/2080 राहु 06/02/2081
गुरु - शनि 06/02/2081 21/08/2083	गुरु - बुध 21/08/2083 26/11/2085	गुरु - केतु 26/11/2085 02/11/2086	गुरु - शुक्र 02/11/2086 03/07/2089	गुरु - सूर्य 03/07/2089 21/04/2090
शनि 03/07/2081 बुध 11/11/2081 केतु 04/01/2082 शुक्र 07/06/2082 सूर्य 23/07/2082 चंद्र 09/10/2082 मंगल 02/12/2082 राहु 19/04/2083 गुरु 21/08/2083	बुध 16/12/2083 केतु 02/02/2084 शुक्र 19/06/2084 सूर्य 31/07/2084 चंद्र 08/10/2084 मंगल 25/11/2084 राहु 29/03/2085 गुरु 18/07/2085 शनि 26/11/2085	केतु 16/12/2085 शुक्र 10/02/2086 सूर्य 27/02/2086 चंद्र 28/03/2086 मंगल 17/04/2086 राहु 07/06/2086 गुरु 22/07/2086 शनि 14/09/2086 बुध 02/11/2086	शुक्र 13/04/2087 सूर्य 01/06/2087 चंद्र 21/08/2087 मंगल 17/10/2087 राहु 11/03/2088 गुरु 19/07/2088 शनि 20/12/2088 बुध 07/05/2089 केतु 03/07/2089	सूर्य 17/07/2089 चंद्र 10/08/2089 मंगल 28/08/2089 राहु 10/10/2089 गुरु 18/11/2089 शनि 04/01/2090 बुध 14/02/2090 केतु 03/03/2090 शुक्र 21/04/2090
गुरु - चंद्र 21/04/2090 21/08/2091	गुरु - मंगल 21/08/2091 27/07/2092	गुरु - राहु 27/07/2092 20/12/2094	शनि - शनि 20/12/2094 23/12/2097	शनि - बुध 23/12/2097 02/09/2100
चंद्र 31/05/2090 मंगल 29/06/2090 राहु 10/09/2090 गुरु 14/11/2090 शनि 30/01/2091 बुध 09/04/2091 केतु 07/05/2091 शुक्र 27/07/2091 सूर्य 21/08/2091	मंगल 10/09/2091 राहु 31/10/2091 गुरु 15/12/2091 शनि 07/02/2092 बुध 26/03/2092 केतु 15/04/2092 शुक्र 11/06/2092 सूर्य 28/06/2092 चंद्र 27/07/2092	राहु 05/12/2092 गुरु 01/04/2093 शनि 18/08/2093 बुध 20/12/2093 केतु 09/02/2094 शुक्र 05/07/2094 सूर्य 18/08/2094 चंद्र 30/10/2094 मंगल 20/12/2094	शनि 12/06/2095 बुध 15/11/2095 केतु 18/01/2096 शुक्र 19/07/2096 सूर्य 12/09/2096 चंद्र 13/12/2096 मंगल 15/02/2097 राहु 30/07/2097 गुरु 23/12/2097	बुध 11/05/2098 केतु 08/07/2098 शुक्र 19/12/2098 सूर्य 06/02/2099 चंद्र 29/04/2099 मंगल 25/06/2099 राहु 19/11/2099 गुरु 30/03/2100 शनि 02/09/2100



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - राहु - गुरु	शुक्र - राहु - शनि	शुक्र - राहु - बुध	शुक्र - राहु - केतु
02/08/2025 11:06	26/12/2025 13:30	18/06/2026 01:21	20/11/2026 06:54
26/12/2025 13:30	18/06/2026 01:21	20/11/2026 06:54	23/01/2027 04:57
गुरु 21/08/2025 22:38	शनि 23/01/2026 00:47	बुध 10/07/2026 01:09	केतु 24/11/2026 00:24
शनि 14/09/2025 01:48	बुध 16/02/2026 14:40	केतु 19/07/2026 02:28	शुक्र 04/12/2026 16:04
बुध 04/10/2025 18:33	केतु 26/02/2026 17:33	शुक्र 13/08/2026 23:24	सूर्य 07/12/2026 20:46
केतु 13/10/2025 07:05	शुक्र 27/03/2026 15:32	सूर्य 21/08/2026 17:40	चंद्र 13/12/2026 04:37
शुक्र 06/11/2025 15:29	सूर्य 05/04/2026 07:43	चंद्र 03/09/2026 16:08	मंगल 16/12/2026 22:06
सूर्य 13/11/2025 22:48	चंद्र 19/04/2026 18:43	मंगल 12/09/2026 17:27	राहु 26/12/2026 12:12
चंद्र 26/11/2025 03:00	मंगल 29/04/2026 21:36	राहु 06/10/2026 00:17	गुरु 04/01/2027 00:45
मंगल 04/12/2025 15:33	राहु 25/05/2026 22:11	गुरु 26/10/2026 17:02	शनि 14/01/2027 03:38
राहु 26/12/2025 13:30	गुरु 18/06/2026 01:21	शनि 20/11/2026 06:54	बुध 23/01/2027 04:57
शुक्र - राहु - शुक्र	शुक्र - राहु - सूर्य	शुक्र - राहु - चंद्र	शुक्र - राहु - मंगल
23/01/2027 04:57	24/07/2027 19:57	17/09/2027 14:51	17/12/2027 22:21
24/07/2027 19:57	17/09/2027 14:51	17/12/2027 22:21	19/02/2028 20:24
शुक्र 22/02/2027 15:27	सूर्य 27/07/2027 13:42	चंद्र 25/09/2027 05:29	मंगल 21/12/2027 15:51
सूर्य 03/03/2027 18:36	चंद्र 01/08/2027 03:17	मंगल 30/09/2027 13:19	राहु 31/12/2027 05:57
चंद्र 18/03/2027 23:51	मंगल 04/08/2027 07:59	राहु 14/10/2027 06:03	गुरु 08/01/2028 18:29
मंगल 29/03/2027 15:32	राहु 12/08/2027 13:13	गुरु 26/10/2027 10:15	शनि 18/01/2028 21:23
राहु 26/04/2027 00:59	गुरु 19/08/2027 20:32	शनि 09/11/2027 21:14	बुध 27/01/2028 22:42
गुरु 20/05/2027 09:23	शनि 28/08/2027 12:44	बुध 22/11/2027 19:42	केतु 31/01/2028 16:12
शनि 18/06/2027 07:21	बुध 05/09/2027 07:00	केतु 28/11/2027 03:32	शुक्र 11/02/2028 07:52
बुध 14/07/2027 04:17	केतु 08/09/2027 11:42	शुक्र 13/12/2027 08:47	सूर्य 14/02/2028 12:34
केतु 24/07/2027 19:57	शुक्र 17/09/2027 14:51	सूर्य 17/12/2027 22:21	चंद्र 19/02/2028 20:24
शुक्र - गुरु - गुरु	शुक्र - गुरु - शनि	शुक्र - गुरु - बुध	शुक्र - गुरु - केतु
19/02/2028 20:24	28/06/2028 17:12	29/11/2028 22:24	16/04/2029 22:00
28/06/2028 17:12	29/11/2028 22:24	16/04/2029 22:00	12/06/2029 17:36
गुरु 08/03/2028 03:59	शनि 23/07/2028 03:14	बुध 19/12/2028 11:33	केतु 20/04/2029 05:33
शनि 28/03/2028 17:28	बुध 13/08/2028 23:34	केतु 27/12/2028 12:44	शुक्र 29/04/2029 16:49
बुध 16/04/2028 03:01	केतु 22/08/2028 23:28	शुक्र 19/01/2029 12:40	सूर्य 02/05/2029 13:00
केतु 23/04/2028 16:50	शुक्र 17/09/2028 16:20	सूर्य 26/01/2029 10:14	चंद्र 07/05/2029 06:38
शुक्र 15/05/2028 08:18	सूर्य 25/09/2028 09:24	चंद्र 06/02/2029 22:12	मंगल 10/05/2029 14:10
सूर्य 21/05/2028 20:08	चंद्र 08/10/2028 05:50	मंगल 14/02/2029 23:23	राहु 19/05/2029 02:43
चंद्र 01/06/2028 15:52	मंगल 17/10/2028 05:44	राहु 07/03/2029 16:07	गुरु 26/05/2029 16:32
मंगल 09/06/2028 05:41	राहु 09/11/2028 08:55	गुरु 26/03/2029 01:40	शनि 04/06/2029 16:26
राहु 28/06/2028 17:12	गुरु 29/11/2028 22:24	शनि 16/04/2029 22:00	बुध 12/06/2029 17:36

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - गुरु - शुक्र 12/06/2029 17:36 22/11/2029 01:36	शुक्र - गुरु - सूर्य 22/11/2029 01:36 09/01/2030 18:24	शुक्र - गुरु - चंद्र 09/01/2030 18:24 31/03/2030 22:24	शुक्र - गुरु - मंगल 31/03/2030 22:24 27/05/2030 18:00
शुक्र 09/07/2029 18:56 सूर्य 17/07/2029 21:44 चंद्र 31/07/2029 10:24 मंगल 09/08/2029 21:40 राहु 03/09/2029 06:04 गुरु 24/09/2029 21:32 शनि 20/10/2029 14:24 बुध 12/11/2029 14:20 केतु 22/11/2029 01:36	सूर्य 24/11/2029 12:03 चंद्र 28/11/2029 13:27 मंगल 01/12/2029 09:38 राहु 08/12/2029 16:57 गुरु 15/12/2029 04:47 शनि 22/12/2029 21:51 बुध 29/12/2029 19:26 केतु 01/01/2030 15:36 शुक्र 09/01/2030 18:24	चंद्र 16/01/2030 12:44 मंगल 21/01/2030 06:22 राहु 02/02/2030 10:34 गुरु 13/02/2030 06:18 शनि 26/02/2030 02:44 बुध 09/03/2030 14:42 केतु 14/03/2030 08:20 शुक्र 27/03/2030 21:00 सूर्य 31/03/2030 22:24	मंगल 04/04/2030 05:57 राहु 12/04/2030 18:29 गुरु 20/04/2030 08:18 शनि 29/04/2030 08:12 बुध 07/05/2030 09:23 केतु 10/05/2030 16:56 शुक्र 20/05/2030 04:12 सूर्य 23/05/2030 00:22 चंद्र 27/05/2030 18:00
शुक्र - गुरु - राहु 27/05/2030 18:00 20/10/2030 20:24	शुक्र - शनि - शनि 20/10/2030 20:24 21/04/2031 23:35	शुक्र - शनि - बुध 21/04/2031 23:35 02/10/2031 20:06	शुक्र - शनि - केतु 02/10/2031 20:06 09/12/2031 07:23
राहु 18/06/2030 15:58 गुरु 08/07/2030 03:29 शनि 31/07/2030 06:40 बुध 20/08/2030 23:24 केतु 29/08/2030 11:57 शुक्र 22/09/2030 20:21 सूर्य 30/09/2030 03:40 चंद्र 12/10/2030 07:52 मंगल 20/10/2030 20:24	शनि 18/11/2030 20:19 बुध 14/12/2030 18:58 केतु 25/12/2030 11:21 शुक्र 24/01/2031 23:52 सूर्य 03/02/2031 03:38 चंद्र 18/02/2031 09:54 मंगल 01/03/2031 02:17 राहु 28/03/2031 13:34 गुरु 21/04/2031 23:35	बुध 15/05/2031 04:41 केतु 24/05/2031 18:05 शुक्र 21/06/2031 01:30 सूर्य 29/06/2031 06:08 चंद्र 12/07/2031 21:51 मंगल 22/07/2031 11:15 राहु 16/08/2031 01:07 गुरु 06/09/2031 21:27 शनि 02/10/2031 20:06	केतु 06/10/2031 18:34 शुक्र 18/10/2031 00:27 सूर्य 21/10/2031 09:24 चंद्र 27/10/2031 00:21 मंगल 30/10/2031 22:48 राहु 10/11/2031 01:42 गुरु 19/11/2031 01:36 शनि 29/11/2031 17:59 बुध 09/12/2031 07:23
शुक्र - शनि - शुक्र 09/12/2031 07:23 19/06/2032 01:53	शुक्र - शनि - सूर्य 19/06/2032 01:53 15/08/2032 21:50	शुक्र - शनि - चंद्र 15/08/2032 21:50 20/11/2032 07:05	शुक्र - शनि - मंगल 20/11/2032 07:05 26/01/2033 18:21
शुक्र 10/01/2032 10:28 सूर्य 20/01/2032 01:47 चंद्र 05/02/2032 03:20 मंगल 16/02/2032 09:13 राहु 16/03/2032 07:11 गुरु 11/04/2032 00:03 शनि 11/05/2032 12:35 बुध 07/06/2032 20:00 केतु 19/06/2032 01:53	सूर्य 21/06/2032 23:17 चंद्र 26/06/2032 18:57 मंगल 30/06/2032 03:54 राहु 08/07/2032 20:06 गुरु 16/07/2032 13:10 शनि 25/07/2032 16:55 बुध 02/08/2032 21:33 केतु 06/08/2032 06:30 शुक्र 15/08/2032 21:50	चंद्र 23/08/2032 22:36 मंगल 29/08/2032 13:33 राहु 13/09/2032 00:32 गुरु 25/09/2032 20:58 शनि 11/10/2032 03:14 बुध 24/10/2032 18:56 केतु 30/10/2032 09:53 शुक्र 15/11/2032 11:25 सूर्य 20/11/2032 07:05	मंगल 24/11/2032 05:32 राहु 04/12/2032 08:26 गुरु 13/12/2032 08:20 शनि 24/12/2032 00:43 बुध 02/01/2033 14:07 केतु 06/01/2033 12:34 शुक्र 17/01/2033 18:27 सूर्य 21/01/2033 03:25 चंद्र 26/01/2033 18:21

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 0 वर्ष 5 मास 27 दिन

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
08/02/1992	05/08/1992	06/08/1998	05/08/2005	05/08/2013
05/08/1992	06/08/1998	05/08/2005	05/08/2013	06/08/2014
00/00/0000	उल्क 05/08/1993	सिद्ध 16/12/1999	संक 17/05/2007	मंग 16/08/2013
00/00/0000	सिद्ध 06/10/1994	संक 06/07/2001	मंग 06/08/2007	पिंग 05/09/2013
00/00/0000	संक 05/02/1996	मंग 15/09/2001	पिंग 15/01/2008	धांय 05/10/2013
00/00/0000	मंग 05/04/1996	पिंग 04/02/2002	धांय 15/09/2008	भ्राम 15/11/2013
00/00/0000	पिंग 05/08/1996	धांय 05/09/2002	भ्राम 05/08/2009	भद्रि 05/01/2014
00/00/0000	धांय 04/02/1997	भ्राम 16/06/2003	भद्रि 15/09/2010	उल्क 07/03/2014
08/02/1992	भ्राम 05/10/1997	भद्रि 05/06/2004	उल्क 15/01/2012	सिद्ध 17/05/2014
भ्राम 05/08/1992	भद्रि 06/08/1998	उल्क 05/08/2005	सिद्ध 05/08/2013	संक 06/08/2014

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
06/08/2014	05/08/2016	06/08/2019	06/08/2023	05/08/2028
05/08/2016	06/08/2019	06/08/2023	05/08/2028	06/08/2034
पिंग 15/09/2014	धांय 05/11/2016	भ्राम 15/01/2020	भद्रि 16/04/2024	उल्क 05/08/2029
धांय 15/11/2014	भ्राम 06/03/2017	भद्रि 05/08/2020	उल्क 14/02/2025	सिद्ध 06/10/2030
भ्राम 04/02/2015	भद्रि 05/08/2017	उल्क 06/04/2021	सिद्ध 04/02/2026	संक 05/02/2032
भद्रि 17/05/2015	उल्क 04/02/2018	सिद्ध 15/01/2022	संक 17/03/2027	मंग 05/04/2032
उल्क 16/09/2015	सिद्ध 05/09/2018	संक 05/12/2022	मंग 07/05/2027	पिंग 05/08/2032
सिद्ध 05/02/2016	संक 07/05/2019	मंग 15/01/2023	पिंग 16/08/2027	धांय 04/02/2033
संक 16/07/2016	मंग 06/06/2019	पिंग 06/04/2023	धांय 15/01/2028	भ्राम 05/10/2033
मंग 05/08/2016	पिंग 06/08/2019	धांय 06/08/2023	भ्राम 05/08/2028	भद्रि 06/08/2034

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
06/08/2034 05/08/2041	05/08/2041 05/08/2049	05/08/2049 06/08/2050	06/08/2050 05/08/2052	05/08/2052 06/08/2055
सिद्ध 16/12/2035 संक 06/07/2037 मंग 15/09/2037 पिंग 04/02/2038 धांय 05/09/2038 भ्राम 16/06/2039 भद्रि 05/06/2040 उल्क 05/08/2041	संक 17/05/2043 मंग 06/08/2043 पिंग 15/01/2044 धांय 15/09/2044 भ्राम 05/08/2045 भद्रि 15/09/2046 उल्क 15/01/2048 सिद्ध 05/08/2049	मंग 16/08/2049 पिंग 05/09/2049 धांय 05/10/2049 भ्राम 15/11/2049 भद्रि 05/01/2050 उल्क 07/03/2050 सिद्ध 17/05/2050 संक 06/08/2050	पिंग 15/09/2050 धांय 15/11/2050 भ्राम 04/02/2051 भद्रि 17/05/2051 उल्क 16/09/2051 सिद्ध 05/02/2052 संक 16/07/2052 मंग 05/08/2052	धांय 05/11/2052 भ्राम 06/03/2053 भद्रि 05/08/2053 उल्क 04/02/2054 सिद्ध 05/09/2054 संक 07/05/2055 मंग 06/06/2055 पिंग 06/08/2055
भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
06/08/2055 06/08/2059	06/08/2059 05/08/2064	05/08/2064 06/08/2070	06/08/2070 05/08/2077	05/08/2077 05/08/2085
भ्राम 15/01/2056 भद्रि 05/08/2056 उल्क 06/04/2057 सिद्ध 15/01/2058 संक 05/12/2058 मंग 15/01/2059 पिंग 06/04/2059 धांय 06/08/2059	भद्रि 16/04/2060 उल्क 14/02/2061 सिद्ध 04/02/2062 संक 17/03/2063 मंग 07/05/2063 पिंग 16/08/2063 धांय 15/01/2064 भ्राम 05/08/2064	उल्क 05/08/2065 सिद्ध 06/10/2066 संक 05/02/2068 मंग 05/04/2068 पिंग 05/08/2068 धांय 04/02/2069 भ्राम 05/10/2069 भद्रि 06/08/2070	सिद्ध 16/12/2071 संक 06/07/2073 मंग 15/09/2073 पिंग 04/02/2074 धांय 05/09/2074 भ्राम 16/06/2075 भद्रि 05/06/2076 उल्क 05/08/2077	संक 17/05/2079 मंग 06/08/2079 पिंग 15/01/2080 धांय 15/09/2080 भ्राम 05/08/2081 भद्रि 15/09/2082 उल्क 15/01/2084 सिद्ध 05/08/2085
मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
05/08/2085 06/08/2086	06/08/2086 05/08/2088	05/08/2088 06/08/2091	06/08/2091 06/08/2095	06/08/2095 08/02/2100
मंग 16/08/2085 पिंग 05/09/2085 धांय 05/10/2085 भ्राम 15/11/2085 भद्रि 05/01/2086 उल्क 07/03/2086 सिद्ध 17/05/2086 संक 06/08/2086	पिंग 15/09/2086 धांय 15/11/2086 भ्राम 04/02/2087 भद्रि 17/05/2087 उल्क 16/09/2087 सिद्ध 05/02/2088 संक 16/07/2088 मंग 05/08/2088	धांय 05/11/2088 भ्राम 06/03/2089 भद्रि 05/08/2089 उल्क 04/02/2090 सिद्ध 05/09/2090 संक 07/05/2091 मंग 06/06/2091 पिंग 06/08/2091	भ्राम 15/01/2092 भद्रि 05/08/2092 उल्क 06/04/2093 सिद्ध 15/01/2094 संक 05/12/2094 मंग 15/01/2095 पिंग 06/04/2095 धांय 06/08/2095	भद्रि 16/04/2096 उल्क 14/02/2097 सिद्ध 04/02/2098 संक 17/03/2099 मंग 07/05/2099 पिंग 16/08/2099 धांय 15/01/2100 भ्राम 08/02/2100

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

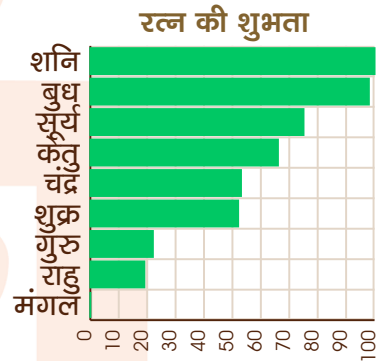
मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	98%	भाग्योदय, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	75%	भाग्योदय, सुख
लहसुनिया	केतु	66%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	53%	धनार्जन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	52%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	22%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, हानि
गोमेद	राहु	19%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	20/12/1993	62%	31%	0%	100%	22%	58%	100%	31%	53%
बुध	20/12/2010	81%	31%	0%	100%	22%	58%	100%	19%	66%
केतु	20/12/2017	62%	31%	0%	98%	22%	58%	89%	0%	78%
शुक्र	20/12/2037	62%	31%	0%	100%	22%	64%	100%	31%	72%
सूर्य	20/12/2043	88%	59%	0%	98%	34%	28%	89%	0%	53%
चंद्र	20/12/2053	81%	66%	0%	100%	22%	52%	100%	0%	53%
मंगल	20/12/2060	81%	59%	0%	86%	34%	52%	100%	0%	72%
राहु	20/12/2078	62%	31%	0%	98%	22%	58%	100%	44%	53%
गुरु	20/12/2094	81%	59%	0%	86%	47%	28%	100%	19%	66%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना व माणिक्य रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, मोती एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते हैं। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपत्ति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते हैं। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्त के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीये एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको उद्योग-व्यापार द्वारा सम्मान



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है। तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यों से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेण, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पत्ति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। दूसरे भाव की शुभता प्राप्ति के लिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको सरकारी क्षेत्रों के दंड से बचाव करेगा। वाणी में दार्शनिकता का भाव लायेगा। यह रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। पारिवारिक संबंधों में मधुरता लाने में भी लहसुनिया रत्न शुभ फल प्रदान करेगा। धन बढ़ायेगा। पारिवारिक सुखों को बढ़ायेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपके लिए शुभत्व प्रदायक रत्न है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से

आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र आपके लिए पराक्रमेश है। चंद्र ग्रह की शुभता बढ़ाने और इनके साथ बन रहे अशुभ योगों को निष्फल करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहनों से सहयोग, विद्या-बुद्धि एवं संतान सुख दे सकता है। शुभ मोती आपको प्रसन्नचित्त रख सकता है। मोती रत्न से भाग्योदय तथा धर्मपालन में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। तृतीयेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र ग्रह को शक्तिशाली बना सकते हैं।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात् इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात् चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान्, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात्

स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप सामान्य से अधिक महत्वाकांक्षी और शुभकर्मों से दूर रहने वाले हो सकते हैं। अपना घर प्राप्त करने में आपको लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। यह रत्न वाहन सुख में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपको अपनी योग्यतानुसार सम्मान नहीं मिल पाएगा। आपके व्यय चिकित्सा और व्यर्थ के विषयों पर अधिक होने के योग बन सकते हैं। पुखराज रत्न के प्रभाव से आपका व्यापार मंद गति से आगे बढ़ेगा। सरकार द्वारा दंड का सामना भी आपको करना पड़ सकता है। सुख-सुविधाओं का अभाव आपको महसूस हो सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती हैं। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चिरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपको जन्म स्थान पर रहने के अवसर कम मिल सकते हैं। यह रत्न आपको स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल बना सकता है। आपकी सहभागिता ऐसे कार्यों में भी हो सकती है जो धार्मिक व सामाजिक न हो। बातचीत में भाषा की शालीनता का उल्लंघन आपके द्वारा हो सकता है। गोमेद रत्न के कारण वृद्ध अवस्था में आप को सुख की कमी का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से धन हानि के योग भी बन रहे हैं। आपका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत हो सकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आपकी माता को स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति के कारण आपमें व्यवहार कुशलता की कमी होगी। यह रत्न आपको मानसिक चिन्ताओं से युक्त करेगा। आपके घर में अशांति का माहौल उत्पन्न हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर शिक्षा कार्यों में रुचि की कमी होगी। आपको अधिकतर समय घर से दूर रहना पड़ सकता है तथा यह रत्न आपके लिए प्रतिकूल रत्न होने के कारण आपकी भूमि एवं भवन योजनाएं मन्द गति से पूर्ण होंगी। धोखा देकर अपना कार्य निकालने का स्वभाव यह रत्न आपको देगा।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपका अपना ससुराल पक्ष से संबंध खराब हो सकते हैं। यह रत्न आपको बहुत अनुकूल परिणाम नहीं दे पाएगा। रत्न धारण करने पर शुभचिंतकों के द्वारा भी आपका भला नहीं हो पाएगा। रत्न धारण करने पर संभव है कि कानून नियमों के अन्तर्गत रहकर आप अपना जीवनयापन न कर पायें। मूंगा रत्न आपको गुदा संबंधित रोग दे सकता है। रत्न के कारण आपके शरीर में फोड़े फुंसी या घाव होने के योग भी बन सकते हैं। मूंगा धारण करने पर आपको दुर्घटनाओं, आग और चोरी की वजह से धन हानि हो सकती है। यह रत्न आपको वाणी में कड़वाहट दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते हैं। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(20/12/2017 - 20/12/2037)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सूर्य
(20/12/2037 - 20/12/2043)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(20/12/2043 - 20/12/2053)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(20/12/2053 - 20/12/2060)

मंगल की दशा में आपका नीलम, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(20/12/2060 - 20/12/2078)

राहु की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

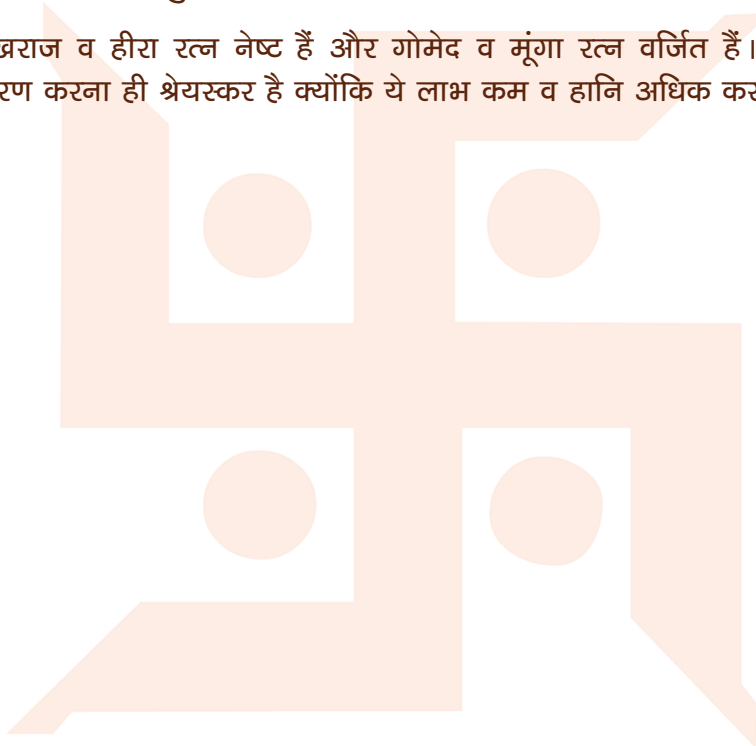
गोमेद व मोती रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(20/12/2078 - 20/12/2094)

गुरु की दशा में आपका नीलम, पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात् यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात् यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक कराये तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

यह आपके शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता, आय क्षेत्र में बाधाएं, अल्प आय, आर्थिक चिंता, कुटुंब से अल्प सुख, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दीर्घकालीन रोग आपकी चिंताएं बढ़ा सकते हैं। मंगल का अष्टम भाव में स्थित होने से आप मांगलिक योग से पीड़ित हैं। दाम्पत्य जीवन कष्टकारी हो सकता है। संतान को भी कष्ट की संभावनाएं, प्रवास में धन हानि, मुख, नेत्र व कान के रोग, ऋण ग्रस्तता बढ़ोतरी हो रही है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित हैं। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक संपत्ति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती हैं। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते हैं। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा हैं, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध

कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
अशुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक उन्नति
धनार्जन
व्यय
धन
शत्रु व रोग मुक्ति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला

पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक आठ होने से आपका मूलांक आठ बनता है। मूलांक आठ का स्वामी शनिग्रह है। शनि के प्रभाव से आप अपने जीवन में धीरे-धीरे उन्नति प्राप्त करेंगी। व्यवधानों, कठिनाईयों से जूझते हुए सफलता प्राप्त करना आपकी प्रकृति में रहेगा। असफलताओं से आप घबड़ाएंगी नहीं। कभी कभी निराशा के भाव अवश्य आ जाया करेंगे। आलस्य आपका सबसे बड़ा शत्रु रहेगा और यही आलस्य आपकी असफलता का कारण रहेगा। अतः किसी भी कार्य को कल पर न टालें। जीवन में शनि ग्रह के प्रभाववश आप काफी महत्वपूर्ण कार्य करेंगी, जिससे आपको नाम, यश, कीर्ति, प्राप्त होगी। आपकी कार्यशैली को हर कोई समझ नहीं पायेगा, इससे आपके विरोधी भी उत्पन्न होंगे।

आपके अन्दर दिखावे की प्रवृत्ति कम रहेगी। इस कारण आपको कुछ लोग रूखा, शुष्क और कठोर हृदय समझेंगे। जबकि अन्दर से आप काफी भावुक एवं दयालु हृदय की होंगी। आप अधिकांश समय में अपने काम से ही मतलब रखेंगी एवं आपकी कोशिश रहेगी कि काम में ही लगी रहें। लेकिन आपके इस व्यवहार के कारण आपके आलोचक भी अधिक रहेंगे।

आपके अन्दर त्याग की भावना अधिक रहेगी एवं श्रम में कभी पीछे नहीं हटेंगी। किसी भी कार्य में कितना भी श्रम, त्याग या बलिदान लगे आप पीछे नहीं हटेंगी। इसी कारण रुकावटों को पार करते हुये आप अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करेंगी। शनि प्रभावी महिलाएँ संघर्ष शील एवं परिश्रमी होती हैं एवं विध्वंस को पार करते हुये उन्नति करने के कारण इनको सफलता देर से लेकिन स्थायी प्राप्त होती है।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्न के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की हिमायती होंगी एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़ी दूर तथा आधुनिक होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगी। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 8 है तथा आपका भाग्यांक 4 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 8 और भाग्यांक 4 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के पूर्ण प्रभाव प्राप्त होंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी उन्नति धीरे-धीरे प्रारंभ होगी। अपने कार्यक्षेत्र में आपको अधिकांश श्रम करना पड़ेगा।

आपकी उन्नति सीढ़ी दर सीढ़ी होगी एवं एक सीढ़ी चढ़ने के पश्चात थोड़ा ठहर के पुनः आपको दूसरी सफलता प्राप्त होगी। आपके अधिसंख्य कार्य देरी से संपन्न होंगे तथा कार्यों के मध्य अवरोध उत्पन्न होंगे, जिन्हें आप धैर्य एवं अपनी मेहनत के द्वारा पार करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति प्रारंभिक काल में विशेष अच्छी नहीं होगी। लेकिन मध्य अवस्था से अंतिम अवस्था तक के बीच स्थिति में सुधार होता चला जाएगा। वैसे धन के कारण आपका कोई भी महत्वपूर्ण कार्य रुकेगा नहीं। आपके अंदर स्वाभिमान की मात्रा सीमा से अधिक रहेगी तथा आपकी कोशिश अपने द्वारा निर्मित सिद्धांतों पर चलने की रहेगी। आपकी सामाजिक स्थिति अनुकूल रहेगी एवं समाज में आपको समयोचित मान-सम्मान प्राप्त होते रहेंगे। जीवन की अंतिम अवस्था भौतिक सुख-संपदाओं से परिपूर्ण रहेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 31 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 40 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 8 की 1 एवं 4 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल तथा अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें। मूलांक 8 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इस प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे तथा इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुःशील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक सुंदर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा मानसिक सन्तुष्टि भी उनकी बनी रहती है। ये अत्याधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। अपने वाक्चातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगी। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुंदर एवं आकर्षक होगा। आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी महिला होंगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंगी साथ ही अपने सदगुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट करने में सफल होंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विभिन्न विषयों कला साहित्य एवं संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी।

लग्न में लग्नेश शुक्र की राशि के प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी तथा उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी संस्था से सम्बंधित हो सकती हैं या इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है।

आप में उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल आप समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी।

इस प्रकार आप स्वस्थ सुंदर आकर्षक व्यक्तित्व, विदुषी एवं साहसी महिला होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आपका जीवन व्यतीत होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति धन संग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के प्रति हमेशा चिन्तित रहेंगी फलतः धन संग्रह सामान्यतया आपके पास रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। साथ ही आप जायदाद आदि पर पूंजी निवेश करेंगी जिससे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होता रहेगा। आपकी पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ अपना समय व्यतीत करेंगी। इसके साथ ही उनकी खुशी तथा खुशहाली के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा पारिवारिक जन भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद प्रिय होंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा बुध इसका स्वामी है अतः आपकी वाणी मृदु तथा प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी मृदुवाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही अपने विचारों को भी कुशलता पूर्वक अभिव्यक्त करेंगी यदि आप यह समझते हैं कि यह विचार अवसर के अनुकूल नहीं है तो आप उसे शीघ्र ही परिवर्तन करने में कोई विलम्ब नहीं करेंगी। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में रहेगी। इसके अतिरिक्त पुरुष वर्ग से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य धातु या रत्नों की भी उपलब्धि होगी। साथ ही धार्मिक या सज्जन लोगों से आप सामान्यतया मित्रता की इच्छुक रहेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से भाई बहिनों के प्रति आप उदार तथा भावुक रहेंगी एवं उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करेंगी। आप उनसे अत्यन्त ही स्नेह भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील रहेंगी परन्तु उनसे आपको यथोचित मान सम्मान अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप अत्यन्त ही साहस एवं पराक्रम का प्रदर्शन भी करेंगी। आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा नैतिकता के प्रति पूर्ण सजग रहेंगी। साथ ही समयानुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करती रहेगी। आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को पूर्ण रूप से याद रखेंगी। इसके अतिरिक्त आप में क्रोध के भाव की भी क्षणिकता रहेगी तथा शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगी। साथ ही नवीन ज्ञान या अन्य विषयों को शीघ्र ही सीखने में समर्थ रहेंगी। दर्शन शास्त्र या उच्च शिक्षा के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी। सामाजिक जनों के प्रति आपका सेवा भाव रहेगा अतः इससे आपको ख्याति तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आप किसी भी उद्देश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में भी समर्थ रहेंगी। अतः यदा कदा आपको समूह का नेतृत्व भी मिल सकता है। साथ ही समाज सेवा या नवीन खोज आदि से भी आप ख्याति अर्जित कर सकती हैं। आधुनिक संचार साधनों की सुख सुविधाएं भी आपको प्राप्त होगी अतः टेलीफोन, दूरदर्शन तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगी। साथ ही प्रकाशन संपादक या संवाददाता के रूप में भी आप सफल हो सकती हैं। इस प्रकार परिश्रम पूर्वक आप अपने घर एवं परिवार का पालन करेंगी। साथ ही आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा बृहस्पति भी मित्रराशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित है। यद्यपि बृहस्पति इस लग्न के लिए विशेष अच्छा नहीं माना जाता है तथापि नैसर्गिक शुभ ग्रह की केन्द्रीय स्थिति सामान्यतया शुभ फल प्रदान करेगी। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सुख संसाधनों से आप युक्त होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में स्थापित होंगी तथा आपका उच्च स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त रहेंगी। साथ ही किसी वृद्ध महिला के द्वारा आपको विशेष सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं इससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा स्वयोग्यता एवं बुद्धिमता से भी वांछित धन संपत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। चतुर्थ भाव में बृहस्पति के प्रभाव से जीवन में आप समृद्धि एवं ऐश्वर्य से युक्त होंगी तथा सामाजिक जनों में आदरणीय होंगी।

आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी। आपका घर का क्षेत्र विस्तृत होगा तथा समस्त भौतिक एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। घर के आकर्षण एवं सफाई का आप विशेष ध्यान रहेंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी आप युक्त होंगी तथा यथोचित समय पर अपने वाहन को प्राप्त करके उसका प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। अपनी व्यवहार कुशलता एवं सौम्य स्वभाव से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। अतः परिवार में सभी लोग उनका सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करेंगे जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको विशिष्ट सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप आज्ञाकारी होंगी तथा सामान्यतया उनकी सलाह से ही कार्य करेंगी। अतः आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी प्रबल रुचि होगी एवं प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप अपनी बुद्धिमता तथा परिश्रम से स्नातक परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा जीवन में इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उत्साह से कार्य करेंगी। आपकी उन्नति से अन्य संबंधी एवं लोग भी प्रभावित होंगे तथा आपको जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलाओं पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगी। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगी। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रुचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रुचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगी तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगी। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

कन्या राशि की पंचम भाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगी तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगी। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकती हैं तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकती हैं।

पंचमभाव में बुध की राशि के प्रभाव से जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी परंतु वे स्वाभिमान प्रवृत्ति के होंगे। माता पिता का कहना भी मानेंगे एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी रखेंगे। वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख दुख में माता पिता का ध्यान रखेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी

अध्ययन के प्रति बच्चों की रुचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर सकेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगी तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यों में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। लेकिन यदा कदा बुखार या अन्य रोगों से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की कमी रहेगी जिससे एक बार बीमार पड़ने पर काफी समय बाद ही आप स्वस्थ हो पाएंगी। इसके अतिरिक्त भावुकता भरे क्षणों में आपको कोई महत्वपूर्ण या संवेदनशील कार्य नहीं करना चाहिए।

आपका शत्रु या विरोध पक्ष पर्याप्त होगा तथा आपके सम्मान में कमी करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेगा। क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही मित्र, संबंधी एवं पड़ोसी भी यदा कदा आपके विरोध करने में तत्परता का प्रदर्शन करेंगे। अतः प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शत्रुओं के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपको कोई विशेष रुचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबंधी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकती हैं यद्यपि इसमें आपका काफी धन व्यय होगा परन्तु किंचित परिश्रम के उपरान्त आपको सफलता भी मिल सकती है।

सेवक वर्ग आपके लिए विशेष विश्वास पात्र तथा ईमानदार नहीं रहेंगे तथा इनसे समय समय पर आपको आर्थिक या अन्य प्रकार से हानि का सामना करना पड़ेगा। साथ ही पारिवारिक रहस्यों का भेद खोलकर भी वे आपकी मान हानि कर सकते हैं। आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा इसी के अनुसार अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगी। यद्यपि आपके पास धनऐश्वर्य पूर्ण होगा परन्तु आपातकाल के लिए संग्रह करने में असमर्थ रहेंगी फलतः ऋण आदि लेने की आवश्यकता पड़ेगी। इसके साथ ही मामा मामी आदि से आपको कोई विशेष सुख एवं सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में वात या गुर्दे से संबन्धित परेशानी हो सकती है। यद्यपि आप एक धन मान सम्मान से युक्त महिला होंगी परन्तु कई बार आपके अच्छे कार्यों से भी समाज में शत्रुता का भाव बन सकता है। अतः सचेत रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया सप्तम भाव में जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति धनवान एवं अधिक व्ययशील होता है। परन्तु नैसर्गिक शुभ ग्रह एवं जलतत्व युक्त शुक्र के प्रभाव से जातक सुशील संगीत एवं कला प्रिय मधुर भाषी तथा आधुनिक विचारों से युक्त होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव से युक्त बुद्धिमान एवं गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आधुनिकता के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगे। उनमें चंचलता का भाव भी होगा एवं प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी। सांसारिक कार्य कलाओं में वह दक्ष होंगे। वह एक शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा आधुनिक तथा पाश्चात्य शास्त्रों में विशेष रुचि रखेंगे। वह कर्तव्य परायण एवं मधुर बोलने वाले होंगे जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

आपके पति गौरवर्ण के सुंदर एवं आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा उनका सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा उनका कद भी सामान्य होगा परन्तु शारीरिक संरचना स्वस्थ सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। वृश्चिक राशि में जल तत्व की प्रधानता के कारण उनमें स्थूलता भी आ सकती है अतः पहले से ही व्यायाम या योगादि द्वारा इसे नियंत्रित करना चाहिए। सौन्दर्य के प्रति वह हमेशा आकर्षित रहेंगे तथा सुंदर वस्तुओं संगीत एवं कला के प्रति समर्पित होंगे।

आपका विवाह विज्ञापन या किसी बंधु वर्ग के द्वारा सम्पन्न होगा। सप्तम भाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम विवाह की भी प्रबल संभावना रहती है। विवाह के बाद आप एक दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे तथा सुख दुःख में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अतः आपके संबंधों में मधुरता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी उच्च एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से भी उनकी स्थिति सुदृढ़ होगी। फलतः विवाह के समय आपको मायके से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से भी आपके संबंधों में मधुरता रहेगी एवं उनको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। वे भी आपको पुत्रीवत् स्नेह देंगे। साथ ही मायके से आर्थिक एवं नैतिक सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति सेवा एवं श्रद्धा का भाव रखेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखकर उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही अपने सव्यवहार एवं मृदुवाणी से साले एवं सालियों से भी यथोचित सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी एवं इससे आपके लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा आपका इस पर पूर्ण विश्वास रहेगा। आपको इन विषयों का न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी आप कुछ न कुछ कार्य अवश्य सम्पन्न करेंगी। पैतृक सम्पत्ति आपको मिलेगी लेकिन वह अल्प मात्रा में ही होगी तथा उसका उपभोग भी अच्छी तरह से करने में असमर्थ रहेंगी। आपके बन्धु या संबन्धी भी उस जायदाद पर अपना अधिकार प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे परस्पर अनावश्यक विवादों से आपसी संबंधों में कटुता का वातावरण बनेगा। अतः पारिवारिक कलह की भी संभावना रहेगी। अतः इससे आपको प्रसन्नता की अपेक्षा अप्रसन्नता ही अधिक प्राप्त होगी।

आपका दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा तथापि यदा कदा आर्थिक कमी से परेशानियां हो सकती हैं लेकिन आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से उसे दूर करने में समर्थ रहेंगी। बीमा आदि कराने से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा इससे आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः बीमा अवश्य करवाएं वह अपना या किसी भी वस्तु का हो सकता है। यद्यपि आपकी कुंडली में कोई दुर्घटना या चोरी आदि का कोई योग नहीं है तथापि इस बारे में आपको सतर्क रहना चाहिए लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म या धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगी परन्तु इसमें स्वयं भी कोई विशेष रुचि नहीं लेंगी तथा स्वेच्छा से किसी धार्मिक ग्रंथ का अध्ययन नहीं करेंगी लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि भी सम्पन्न कर सकती है साथ ही दैनिक पूजा पाठ में न्यूनाधिक समय प्रदान करेंगी या इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी पूजा स्थल पर जाएंगी। आप धार्मिक कार्य कलापों पर विशेष व्यय करना उचित नहीं समझती। लेकिन अन्य विषयों में उच्च शिक्षा अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। धर्म एवं भाग्य को अपनी विचार धारा में कम ही सम्मिलित करेंगी अर्थात् कार्य पर अधिक विश्वास करेंगी। आपकी अर्न्तप्रज्ञा भी विकसित रहेगी तथा मन में आत्मा को स्वीकार करेंगी।

आपके विचार में जीवन कार्य प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक होना चाहिए। अतः अन्य जनों को हमेशा कर्म करने की शिक्षा प्रदान करेंगी तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने को कहेंगी। परन्तु प्रौढ़ावस्था में स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य को विशेष महत्व प्रदान करेंगी। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में ही होगी तथा इनसे आपको जीवन में विशेष लाभ भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा लेकिन समाज में आप एक सम्मानित तथा ख्याति प्राप्त महिला के रूप में सम्माननीया रहेगी। आप अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के फल को युवावस्था के बाद प्राप्त करेंगी तथा इस समय सुखी रहेंगी लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि से भी इच्छित सुख एवं सहयोग मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथापि आप सामान्यतया सन्तुष्टि की ही अनुभूति करेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में नौकरी, फैक्ट्री कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगी। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकती है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्ट्री, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यों से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगी तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगी। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली मानी जाएंगी। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगी इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा। आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षा तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करते हुए कार्यो में सर्वदा तत्पर रहेंगी तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। आप जब कभी भी जिस वस्तु की कामना करेंगी आपको यथेष्ट रूप से उसकी प्राप्ति हो जाएगी। आप शिक्षिका, बैंक, कानून या कम्पनी आदि द्वारा इच्छित लाभ एवं धनार्जन करेंगी यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं है तो आपके पति को उपरोक्त विभागों या सम्बन्धित लोगों से धनार्जन होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। मित्रों के संबंध में आप भाग्यशाली रहेगी तथा उनसे आपको समय समय पर उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं संकट के क्षणों में मित्रवर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन प्रदान करेंगे जिससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। वे आपसे वयस्क भी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी नेता तथा अन्य समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपके संबंध रहेंगे जिससे समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय महिला समझी जाएंगी। इसके साथ ही आपको अपने सामाजिक क्षेत्र में पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। आपको बड़े भाईयों का जीवन में पूर्ण सहयोग तथा स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपको यथा शक्ति अपना योगदान प्रदान करेंगे। फलतः आप पितृवत उनका आदर करेंगी। आपको युवावस्था के बाद किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। इस प्रकार आप जीवन में सुखशैश्वर्य एवं संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करेंगी तथा अवसरनुकूल बचत करने में भी समर्थ रहेंगी। आप सामान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही सम्पन्न करेंगी तथा हमेशा उचित जगह व्यय या निवेश करने की उत्सुक रहेंगी लेकिन आपको सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों पर पूंजी निवेश नहीं करना चाहिए तथा ख्याति प्राप्त जगह ही पूंजीनिवेश करें तभी लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी भी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर एवं धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया युवावस्था के बाद ही सुदृढ़ तथा संतोष प्रद होगी। अतः आपके आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा कम ही रहेगी। इसके साथ ही दीर्घावाधि के निवेशों से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यों पर होगा लेकिन मंगल के प्रभाव से कोई अनावश्यक व्यय भी कर सकती है जिसकी विशेष आवश्यकता न हो। अतः ऐसे समय में आपको सावधान रहना चाहिए। यात्राओं से आपको आनंदानुभूति होगी तथा समय समय पर लाभ भी प्राप्त होगा। जीवन में आपकी विदेश यात्रा अवश्य होगी। यह यात्रा धर्म या धार्मिक कार्य से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य मित्र या संबंधी के सहयोग से यह यात्रा सम्पन्न होगी। इस यात्रा से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा तथा आपकी ख्याति एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। इसके साथ ही यदा कदा बाएं आंख से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरू करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों

का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परन्तु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गि होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्ग होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंभ भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संबंध भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावना बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारम्भ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्टूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्टूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकी माता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगी। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23 अक्टूबर से आप गुप्त विद्यों के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23 अक्टूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्टूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

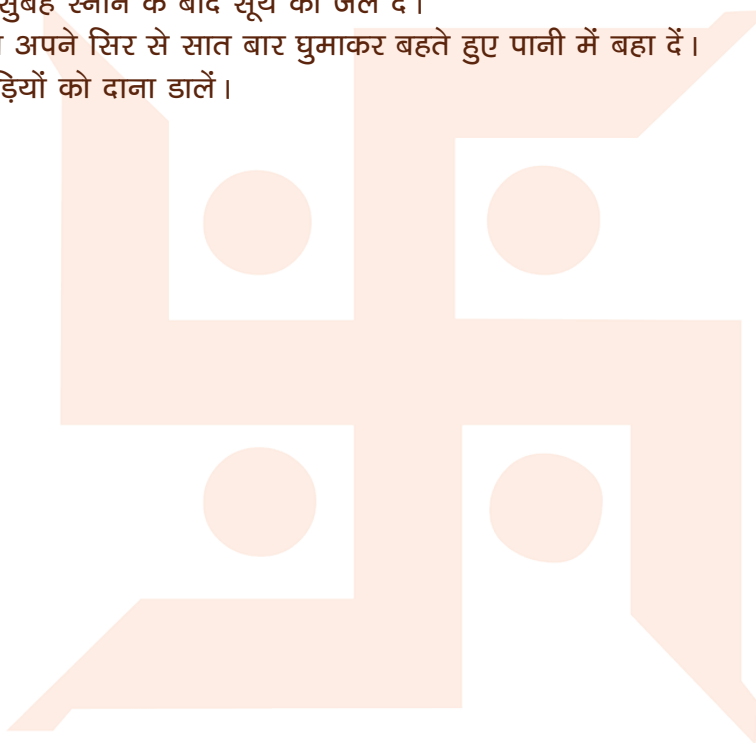


परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारे में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात् इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(20/12/2017 - 20/12/2037)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 20/12/2017 को आरंभ होकर 20/12/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात् अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते हैं अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- शुक्र - मंगल
(20/12/2023 - 19/02/2025)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/12/2017 को प्रारंभ होकर 20/12/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 20/12/2023 को प्रारंभ होकर 19/02/2025 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 11, 2, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी को भी मंगली होना चाहिए। अन्यथा जीवन कष्टप्रद रहेगा या जीवन को खतरा भी हो सकता है।

इस अवधि में बुद्धिमानी में कमी हो सकती है, वाणी कटु हो सकती है, स्वास्थ्य का ह्रास हो सकता है। नशीले पदार्थों से दूर रहना श्रेयस्कर रहेगा। घरेलू और विवाहित जीवन में कष्ट आ सकते हैं। धन और आय के मामलों में भाग्य का साथ देना कठिन होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन ब्रह्मा जी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में प्रतिदिन जाकर उपासना करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(19/02/2025 - 19/02/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 20/12/2017 को प्रारंभ होकर 20/12/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 19/02/2025 को प्रारंभ होकर 19/02/2028 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

अष्टम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अपमान और आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़ालू स्वभाव से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत

धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(19/02/2028 - 20/10/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/12/2017 को आरंभ हुई थी और 20/12/2037 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/02/2028 को प्रारंभ होकर 20/10/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक स्वभाव के, विद्वान और प्रसन्न व्यक्ति होंगे। प्रशासकगण आपसे प्रसन्न रहेंगे। शत्रुओं का विनाश करेंगे, धर्म में रुचि होगी, सम्मान बढ़ेगा, भाग्यशाली रहेंगे। घरेलू वातावरण शांतिपूर्ण रहेगा। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,राहु,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वाले होंगे ।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः ॥
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम् ।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिदुःखी ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 14, 17 ॥

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे ।

अमलयोग

चन्द्राब्धोमन्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि ।
क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान् ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।

सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो

निहताहितो भवति पापभीरुकः।

प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-

द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/ श्लोक 57, 63 ॥

यदि जन्मपत्रिका में छठ भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।

किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।

सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6॥ श्लोक 57,69 ॥

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षित हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो. -16 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,बुध,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।

शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

क्रूरांशे पुत्रभावेषु नीचमूढसमन्विते ।

पापैर्दृष्टेऽथ वा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-16 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश क्रूर नवांशक में नीच या अस्तंगत हो, पाप ग्रहों से दृष्ट अथवा दुःस्थान में हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, शनि, बुध

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र सुख में अभाव हो ऐसी संभावना है।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, मंगल, बुध

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ. 14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्यराश्यंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ. 14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश

में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु, मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्गहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।

शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ.-14/श्लो.-3 ॥

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,शनि

योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्पदंश से मृत्यु योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ. 312-28 ॥

यदि जन्मकुण्डली में अष्टमभाव में राहु हो तथा उसपर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो सर्पदंश से मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,राहु

योग की संभावना : 24 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण सर्प दंश से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।

शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.8/व्ययभाव-4 ॥

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

”अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-

लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,राहु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

”सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु, शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

”चेत्त्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः॥”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो “केमद्रुम” योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “केमद्रुम” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वासि योग

”व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, शुक्र, राहु, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

